राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

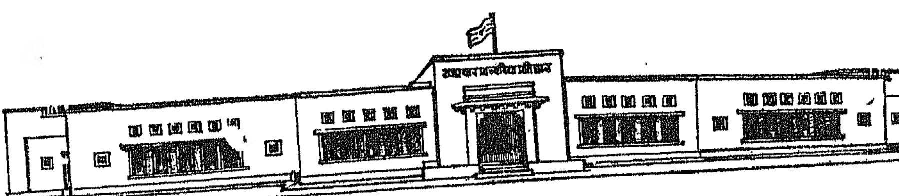
प्रधान सम्पादक–पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द



प्र का श क

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क १०

पण्डित रघुनाथकवि विरचित

प्राकृतानन्द

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

प्राकृतानन्द

सम्पादक,

पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ प्रथमावृत्ति ७५० | खिस्ताब्द १९६२

मुद्रक–निर्णयसागर प्रेस, बम्बई

मुख पृष्ठ आदि के मुद्रक–श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

द्वारा सम्पादित ग्रन्थ

१ त्रिपुराभारती लघुस्तव – कर्ता-सिद्ध सारस्वत श्री लघुपण्डित

२ कर्णामृतप्रपा – कर्ता-महाकवि ठक्कुर सोमेश्वर

३ बालशिक्षा व्याकरण – कर्ता-ठक्कुर संग्रामसिंह

४ पदार्थरत्नमञ्जूषा – कर्ता-पं० कृष्णमिश्र

५ शकुनप्रदीप – कर्ता-पं० लावण्य शर्मा

६ उक्तिरत्नाकर – कर्ता-पं० साधुसुन्दरगणी

७ प्राकृतानन्द – कर्ता-रघुनाथ कवि

८ हम्मीरमहाकाव्य – कर्ता-नयचन्द्र सूरि

९ राठौड़ांरी वंशावली

१० सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ सूची

११ मीरां बृहत् पदावली

१२ रत्नपरीक्षादि सप्त ग्रन्थ संग्रह – कर्ता-ठक्कुर फेरू

विषयविवरणम्

प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' ग्रन्थ प्राकृत भाषा का एक संक्षिप्त व्याकरण है। इसकी रचना पंडित रघुनाथ ने की है जो कवि-कण्ठीरव के विरुद से अपने आपको उल्लिखित करते हैं। ये ज्योतिर्विद् सरस के पुत्र थे। इसके अतिरिक्त इनके समय और स्थान आदि के बारे में कुछ उल्लेख नहीं मिलता। इस ग्रंथ की एक पुरानी हस्तलिखित पोथी विद्वद्वर्य आगमप्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज को शायद बीकानेर में मिली थी। जिस पर से उन्होंने स्वयं इसकी प्रतिलिपि की थी। यह प्रति जैसा कि इसके अन्त में लिखा मिलता है— संवत् १७२६ में लाभपुर अर्थात् लाहोर में लिखी गई थी। सन् १९५२ में जब मेरा बीकानेर जाना हुआ तो उन्होंने यह ग्रन्थ मुझे दिखलाया। मैंने इसे राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकट करने का अपना विचार प्रदर्शित किया तो उक्त सौजन्य-मूर्ति मुनिवर ने अपनी वह प्रतिलिपि बड़े आनन्द के साथ मुझे दे दी। मैंने उसको छपने के लिये बम्बई के निर्णय सागर प्रेस में दी। दीर्घकालावधि में यह ग्रन्थ प्रेस ने छाप कर पूरा किया। कुछ अन्यान्य कारणों से भी ग्रन्थ के प्रकाशन में और अधिक विलम्ब होता रहा। इस तरह प्रतिलिपि के प्राप्त होने के बाद कोई १० वर्ष अनन्तर अब यह ग्रन्थ पाठकों के कर-कमलों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

'प्राकृतानन्द' प्राकृत भाषा का एक छोटा-सा व्याकरण है। ग्रन्थकार का कहना है कि जो पण्डित के कुल में पैदा हुआ है परन्तु अल्पबुद्धि है और कुछ साहित्य का रसास्वाद करना चाहता है उसके ज्ञान के लिये यह प्रयत्न किया गया है। संस्कृत की तरह प्राकृत भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति बहुत ही विशाल है। विविध विषय के हजारों ही ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं। यद्यपि ब्राह्मण-सम्प्रदाय में प्राकृत साहित्य का उतना अधिक संचय नहीं मिलता है, परन्तु जैन और बौद्ध संप्रदाय में प्राकृत भाषा ही का प्राधान्य रहा और इसलिये इन दोनों संप्रदायों में इस भाषा में लिखित साहित्य-संपत्ति की विशालता बहुत अधिक है। बौद्ध साहित्य की प्राकृत भाषा जो कि मूल रूप में 'मागधी' भाषा कहलाती है, अब 'पाली' के नाम से प्रसिद्ध हो गई है। परन्तु जैन साहित्य-संपत्ति मुख्य रूप से प्राकृत के व्यापक नाम से ही प्रसिद्धि प्राप्त करती रही है। भाषा-विदों ने जैन साहित्य की प्राकृत भाषा को 'अर्द्धमागधी'

और 'महाराष्ट्री' प्राकृत के नाम से विभक्त किया है। प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी संमिश्रित है और बाकी का सारा साहित्य प्रायः 'महाराष्ट्री' और 'शौरसेनी' संमिश्रित है। जैन सम्प्रदाय का मौलिक वाङ्मय प्रायः सारा इसी प्रकार की प्राकृत भाषा का अपूर्व भंडार है।

द्रविड़ जाति के भारतीय जन-समूहों की द्रविड़कुलीन भाषाओं के अतिरिक्त समग्र आर्य जातीय जन-समूह की जो विद्यमान भाषायें हैं उनकी उत्पत्ति इस मूल पुरातन प्राकृत से है। शाक्य भगवान् बुद्ध और ज्ञात पुत्र तीर्थंकर महावीर के समय से लेकर वर्तमान काल तक की आर्य-भाषाभाषी व भारतीय जनता की मातृ-भाषा प्राकृत के नाम से संबोधित की जाती रही है। वह प्राचीन प्राकृत अब अनेक उपभाषाओं और देश-विशेष की बोलियों में विभक्त हो गई है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है जैन संप्रदाय का सारा ही मौलिक साहित्य प्राकृत में है। कई ब्राह्मण विद्वानों ने भी प्राकृत भाषा में कुछ विशिष्ट ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें काव्य और नाटक ग्रंथ मुख्य हैं। गौडवहो, सेतुबन्ध, लीलावई, गाथा सत्तसई आदि उत्कृष्ट प्राकृत काव्यकृतियां हैं जो ब्राह्मण विद्वानों की देन हैं। इसी तरह कर्पूरमंजरी आदि अनेक नाटक कृतियां भी प्राकृत के प्रभाव को प्रकट करती हैं।

जिस तरह संस्कृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनी आदि अनेक प्राचीन-अर्वाचीन विद्वानों ने नाना प्रकार के व्याकरण-ग्रन्थों की रचनायें की हैं उसी तरह प्राकृत भाषा का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से वररुचि आदि अनेक विद्वानों ने प्राकृत व्याकरण ग्रन्थों की रचनायें की हैं। यों तो प्राकृत भाषा के बीसों छोटे-बड़े व्याकरण-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं पर उनमें वररुचि का 'प्राकृत-प्रकाश' सब से प्राचीन ग्रन्थ समझा जाता है। प्राकृत-भाषा का सर्वांग संपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ हेमचन्द्र सूरि का है जो उनके महान् व्याकरण ग्रन्थ 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' का अष्टम अध्याय स्वरूप है। इस महान् व्याकरण ग्रन्थ के सात अध्यायों में संस्कृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण ग्रथित है और अष्टम अध्याय में प्राकृत भाषा का परिपूर्ण व्याकरण है। इसमें प्राकृतोत्तरकालीन अपभ्रंश भाषा का भी विस्तृत व्याकरण है जो उनकी मौलिक देन है। हेमचन्द्र सूरि के बाद अनेक छोटे-बड़े प्राकृत व्याकरण बनते रहे और उनमें से अनेक ग्रन्थ प्रकाशित भी हो गये हैं।

वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' हेमचन्द्रसूरि के 'प्राकृत व्याकरण' की अपेक्षा

प्रस्तुत 'प्राकृतानन्द' वररुचिकृत 'प्राकृत-प्रकाश' का ही एक प्रि
संकलन है। संस्कृत के लघुकौमुदी आदि प्रक्रियात्मक शैली के अनुकरण
नाथ कवि ने 'प्राकृत-प्रकाश' को इस प्रकार प्रक्रियात्मक रूप देकर इस प्रा
का संकलन किया है। इसमें कुल ४१६ सूत्र हैं, इससे मालूम देता है
'प्राकृत-प्रकाश' के कुछ सूत्र छोड़ भी दिये हैं। पर, साथ में कुछ ऐसे
दिये हैं जो 'प्राकृत-प्रकाश'की प्रसिद्ध पुस्तक में नहीं मिलते। चौखम्भाग्रन्थ
भामहकृत मनोरमाव्याख्या सहित जो प्राकृत प्रकाश छपा है उसमें कुल
हैं जिनमें के ८७ सूत्र इस प्राकृतानन्द में नहीं हैं; और साथ में इसमें २
हैं जो प्राकृत-प्रकाश में नहीं मिलते। तुलना की दृष्टि से दोनों ग्रन्थों
सूचि इसके साथ दी जाती है। संशोधक विद्वानों को इसका कुछ उपयो
मुद्रित प्राकृत-प्रकाश के और प्राकृतानन्द के सूत्रों में कुछ पाठ-भेद
गोचर होते हैं। लिपिकर्ताओं के कारण ऐसे पाठ-भेदों का होना स्वाभ

यह ग्रंथ अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है। ऑफ्रेट ने
इसका सूचन 'कॅटेलागस कॅटलॉगरम्' भा. १; पृ. ३६१ पर किया है
का नाम सूचीकार को लाहोर के पण्डित राधाकृष्ण के 'पुस्तकानां
में मिला है, जो काश्मीर-निवासी पं० राजाराम शास्त्री ने लिखा था औ
टिक सोसाइटी बंगाल के प्रोसीडिंग्स्, जून १८८० ई. में इसका उल्लेख
प्रस्तुत पुस्तक की प्रेस-कॉपी जिस प्रति से तैयार की गई है वह भी
वि में लाहोर में ही लिखी गई थी।

सौजन्यमूर्ति विद्वद्रत्न मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराज के प्रति
हार्दिक कृतज्ञभाव प्रकट करते हैं कि जिन्होंने स्वयं अपने हस्ताक्षर
रचना की सुन्दर प्रेस कापी कर के हमको राजस्थान पुरातन ग्रन्थमा
करने के लिये प्रदान की। प्रेस की कठिनाई के कारण इसके प्रूफ
कार्य कार्यालय द्वारा ही किया गया अतः कुछ अशुद्धियां भी
विद्वज्जन उसे स्वयं शुद्ध कर लेंगे, ऐसी विज्ञप्ति के साथ कवि रघु
ग्रन्थ के प्रारंभ में इस विषय में जो बहुत ही सुन्दर उक्ति प्रकट की
हम भी यहां पुनः उद्धृत कर देना चाहते हैं।

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जातु साधवः।
शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम्॥

—मुनि

जोधपुर
दि० २५-६-६३

प्राकृतानन्दस्य सूत्रानुक्रमणिका

प्राकृतानन्दप्राकृतप्रकाशयोः सूत्राणां भेदानुक्रमणिका

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क	क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	अंकोठे ल्लः	२००		अंकोले ल्लः	२।२५
	×		१	अत इदेतो लुक् च	११।१०
	×		२	अदीर्घः सम्बुद्धौ	११।१३
	×		३	अनादावयुजोस्तथयोर्दधौ	१२। ३
१	अपौ व्वि	३०९		×	
	अम्हेहिंतो अम्हेसुन्तो म्यसि	२७४		अम्हाहिन्तो अम्हासुन्तोम्यसि	६।४९
	×		४	अस्मदः सौ हके हगे अहके	११।९
	×		५	अस्मदोजसावअं च	१२।२५
	×		६	अयुक्तस्यानादौ	२।१
२	अव्वो अम्मो दुःखाऽऽक्षेप-विस्मापनेषु	३०१		×	
	असेर्लोपः	२६६		अस्तेर्लोपः	७।६
	×		७	अस्तेरच्छ	१२।१९
३	अस्थिनि	२१७		×	
	आङो ञादेशस्य	१७०		आङो ञस्य	३।५५
	आच्च सौ	१५५		आच सो	५।३५
	×		८	आत्मनि पः	३।४८
	×		९	आनन्तर्ये णवरि	९।८
	आमः एसिं	२२३		आम एसिं	६।४
	आमि सिं	२४६		आमासिं	६।१२
	आलिवल्लोल्लालवन्तोत्ता मतुपः	३१४		आलिवल्लोलवन्तेन्तामतुपः	४।२५
	×		१०	आविःक्त कर्मभावेषु वा	७।२८
	×		११	आश्चर्यस्याच्चरिअं	१२।३०
४	इअं भूते	३२९		×	
	×		१२	इ गध्रसमेषु	१२।६
	इट् मयोर्मिः	३२५		इड् मिपोर्मिः	७।३
	×		१३	इत्सदादिषु	१।११
	×		१४	इः श्रीह्रीक्रीतक्लान्तक्लेशम्ला-नस्वप्नस्पर्शहर्षार्हगर्हेषु	३।६२
	×		१५	इवस्य पिवः	१०।४

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क	क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
५	इवे व्व	३०८		×	
	ईत् स्त्रियाम्	४१६		ईच स्त्रियाम्	७।११
	उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा	८६		उत्तरीयाऽऽनीययोर्ज्जो वा	२।१७
	उद्ध्मो धूमा	३६३		उद्ध्म उद्धुमा	८।३२
६	उदूखले ह्वा वा	१८७		×	
	उलूहले ल्वा वा	१८७ A		उलूखलेल्वा वा	१।२१
	×		१७	ऋरीति	१।३०
	×		१८	लृतः क्लृप्तः इलिः	१।३३
	एच्च क्त्वातुमुन् तव्य-भविष्यत्सु	३३४		एच क्त्वातुमुन् तव्यभविष्यत्सु	७।३३
	×		१९	एवस्य जेव्व	१२।२३
	औत् ओत्	७३		आत औत्	१।४१
	×		२०	कन्यायां न्यस्य	१०।१०
	×		२१	करेण्वां रणोः स्थितिपरिवृत्तिः	४।२८
	×		२२	कृञ्गृङ्गमां क्तस्य डः	११।१५
	क्षुधेर्झूरः	३८५		क्षुधेर्जूरः	८।६४
	×		२३	क्त्व इअः	१२।९
	×		२४	क्त्व स्तूनम्	१०।१३
	×		२५	क्तान्तादुश्च	११।११
	×		२६	क्त्वो दाणिः	११।१६
	क्वचिद् युक्तस्यापि	५४		क्वचित्पृक्तस्यापि	१।३१
	×		२७	क्षस्य स्कः	११।८
	×		२८	खिदेर्विसूरः	८।६३
			२९	गर्दभसंमर्दवितर्दिविच्छर्दिषु र्दस्य	३।२६
	घे क्त्वा-तुमुन्तव्येषु	४१६		घेत् क्त्वा तुमुन् तव्येषु	८।१६
७	ङसा से			×	
	ङसि तुमो-तुह-तुज्झ-तुम्ह-तुब्भा	२६१		ङसि तुमो तुह तुज्झ तुम्ह तुम्हाः	६।३१
८	ङसो वा	१६२		×	
	×		३०	ङसो हो वा दीर्घत्वञ्च	११।१२
	ङे ए-म्मी	२२		ङे रेम्मी	५।९
	×		३१	ङेर्दन हः	६।१६
	×		३२	चर्चेश्चम्पः	८।६५
	×		३३	चवर्गस्य स्पष्टतया	

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
९	चिअ चेअ अवधारणे	२९१
	×	
१०	जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च	१४०
	×	
	जस ओश्च यूत्वम्	१३९
	जस्-शस्-ङसो णो	२३१
	×	
११	ज्ञो णज्ज-णव्वौ वा	४०८
	×	
	×	
१२	झयि तद्वर्गान्तः	७
	टा-ङस् ङीनामिदे ददातः	१६०
	टा-ङचोस्तइ तए तुमए तुए	२५५
	×	
	×	
१३	णवरि आनन्तर्ये	२९६
	×	
	णुदेर्लोणः	३८९
	णो शसि	२६९
	×	
	×	
	×	
	त्तं वाऽस्मि	२५३
	तुज्झेहिं तुम्हेहिं तुब्भेहिं भिसि	२५८
	तूनइरः शीले	४१७
१४	ते-तिपोरिदेतौ	३१७
	त्रेस्ती	१५०
	×	
१५	दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ वब्भा	४०७
	×	
१६	दोहदे णः	९७
	×	

क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	×	
३४	चिट्ठस्य चिष्टः	११।१४
	×	
३५	जश्शसङसां णो	५।३८
	जसश्च ओ यूत्वम्	५।१६
	जश्शसङसां णो	५।३८
३६	जोयः	११।४
	×	
३७	ज्ञस्य ञ्जः	१०।९
३८	ञ्ज ञ्च	१०।११
	×	
	टाङसिङस्ङीनामिदेददातः	५।२२
	टाङचोस्तइ तएतुमए तुमे	६।३०
३९	टामोर्णः	५।४
४०	डुकृञः करः	१२।१५
	×	
४१	णिर्जश्शसोर्वा क्लीबे स्वरदीर्घश्च	१२।११
	णुदो णोल्ल	८।७
	णो शसि	६।४४
४२	णो नः	१०।५
४३	ततिपो रिदेतो	७।१
४४	तिपाहिथ	१२।२०
	तु च्चामि	६।२७
	तुज्झेहिं तुम्हेहिं भिसि	६।३४
	तूणइरः शीले	४।२४
	×	
	त्रस्ति	६।५५
४५	ददातेर्दे दइस्स लृटि	१२।१४
	×	
४६	दृशेः पेक्खः	१२।१८
	×	
४७	धातोर्भावकर्तृकर्मसु परस्मैपदम्	१२।२७

क्र.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क	क्र.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	×		४८	न लृटि	१२।१३
	नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो	२८७		नपुंसके स्वमोद्दिदमिण-मिणमो	६।१८
	नाऽऽमन्त्रणे सावोत्व-दीर्घत्व बिन्दव	२५		नामन्त्रणे सावोत्व-दीर्घबिन्दवः	५।२७
	×		४९	नान्त्यद्वित्वे	७।९
	×		५०	नैदावे	७।२९
	पदः पालः	२८३		पदेः पालः	८।१०
	×		५१	पनसेऽपि	२।३७
	परुष-परिघपरिखासु फः			परुषपलितपरिखासु फः	२।३६
	×		५२	पुत्रेऽपि क्वचित्	१२।१५
	×		५३	पैशाची	१०।१
	×		५४	प्रकृतिः शौरसेनी	१०।२
	×		५५	प्रकृतिः संस्कृतम्	१२।२
	×		५६	प्रकृत्या दोलादण्डदशनेषु	१२।३१
१७	बाष्पेऽश्रुणि हः	१२३		×	
१८	बृहस्पतौ ब-होर्भ-औ	१४५		×	
	×		५७	ब्रह्मण्यविज्ञकन्यकानां ण्यज्ञ-न्यानां ञ्जो वा	१२।७
	×		५८	भविष्यति मिपास्सं वा स्वर-दीर्घत्वञ्च	१२।२१
	×		५९	भाजने जस्य	३।४
१९	भियो-भाः बीहौ	३७६		×	
	×		६०	भोभुवस्तिङि	१२।१२
	भ्यसो हिंतो सुंतो	२१		भ्यसो हिन्तो सुन्तो	५।७
	×		६१	मागधी	११।१
	×		६२	मिपो लोटि च	१२।२९
	मृजेलुभ-पुसौ	३७४		मृजेर्लुभसुपौ	८।६७
	×		६३	यि तद्वर्गान्तः	४।१७
	यावदादिषु वस्य	१३४		याबादादिषु वस्य	४।५
	×		६४	राज्ञो राचि टाङसिङस्-ङिषु वा	१०।१२
	रुषादीनां दीर्घः	३८४		रुषादीनां दीर्घता	८।४६
	×		६५	र्यस्य रिअः	१०।८

क.	प्राकृतानन्दस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क	क.	प्राकृतप्रकाशस्य सूत्राणि	सूत्राङ्क
	लाहल-लाङ्गल-लाङ्गूलेषु वा णः	९८		लाहले णः	२।४०
	×		६७	लिहेर्लिज्झ	८।४९
२०	लृतः क्लृप्तः इलि	१९१		×	
	×		६८	वर्णानां तृतीयचतुर्थयोर-युजोरनाद्योराद्यौ	१०।३
	×		६९	वाष्पेऽश्रुणि हः	३।३८
	×		७०	विअवेअ अवधारणे	९।३
	×		७१	A विसिन्यां भः	२।३८
	×		७१	B बृहस्पतौ वहेर्भाओ	४।३०
	वे वक्के च	३९७		वेव्वे च	८।३१
	×		७२	व्यापृते डः	१२।४
	शकेस्तर-चअ-तीराः	३८८		शकेस्तरव अतीराः	८।७०
	×		७३	शीकरे भः	२।५
	×		७४	शृगालशब्दस्य शिआला शिआले शिआलकाः	११।१७
	×		७५	शेषं महाराष्ट्रीवत्	१२।३२
	×		७६	शौरसेनी	१२।१
	षट्-शावकसप्तपर्णानां छः	९९		षट्शावकसप्तपर्णानां छः	२।४१
	×		७७	षसोः सः	११।३
	×		७८	ष्टस्य सटः	१०।६
	ष्ठा-ध्या-गानां-ठाअ-भाअ-गाआः	३६९		ष्टाध्यागानांठाअभाअगाआः	८।२५
	सर्वज्ञतुल्येषु अस्य	१०५		सर्वज्ञतुल्येषु ञः	३।५
	×		७९	सर्वज्ञेङ्गितज्ञयोर्णः	१२।८
	×		८०	सर्वनाम्नां ङे सित्वा	१२।२६
	×		८१	सिच	३।३७
२१	सीकरे भः	७९		×	
	×		८२	स्तम्बे	३।१३
	×		८३	स्थश्चिट्ठः	१२।१६
	×		८४	स्मरतेः सुमर	१२।१७
	×		८५	स्त्रियामित्थी	१२।२२
	×		८६	स्नस्य सनः	१०।७
	हुंदानपृच्छानिर्धारणेषु	२९०		हुदानपृच्छानिर्धारणेषु	९।२
	×		८७	हृदयस्य हितअकम्	१०।१४
	×		८८	हृदयस्य हडक्कः	११।१६
	ह्न-ह्ल-ह्मेषु नलमां स्थितिरूर्ध्वम्	१०८		ह्नह्लह्मेषु नलमां स्थितिरूर्ध्वम्	३।८
	[illegible]	४१		[illegible]	[illegible]

भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृता चेति भेदतः ।
कौमारपाणिनीयादिसंस्कृता संस्कृता भवेत् ॥ १

इयं तु देवतादीनां मुनीनां नायकस्य च
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रमन्त्रिकञ्चुकिनामपि ॥ २

गार्ग्यगालवशाकल्यपाणिन्याद्या यथर्षयः ।
शब्दराशेः संस्कृतस्य व्याकर्त्तारो महत्तमाः ॥ ३

तथैव प्राकृतादीनां षड्भाषाणां महामुनिः ।
आदिकाव्यकृदाचार्यो व्याकर्त्ता लोकविश्रुतः ॥ ४

यथैव रामचरितं संस्कृतं तेन निर्मितम् ।
तथैव प्राकृतेनापि निर्मितं हि सतां मुदे ॥ ५

पाणिन्याद्यैः शिक्षितत्वात्संस्कृती स्याद्यथोत्तमा ।
प्राचेतसव्याकृतत्वात्प्राकृत्यपि तथोत्तमा ॥ ६

पण्डित - रघुनाथ - कवि - विरचित

प्राकृतानन्द

प्रेङ्खन्नखच्छविमिथश्छुरितेन यस्मिन्,
रक्ताञ्चलग्रथनकौतुकमन्वकारि ।
स्वेदोद्गमद्विगुणदानजलः स भूयात्,
भूयात् करग्रहविधिः शिवयोः शिवाय ॥ १ ॥

रचयति नृसिंहरत्यै रघुनाथः सरसदैववित्तनयः ।
रसिकानन्दनिमित्तं सानन्दं प्राकृतानन्दम् ॥ २ ॥

दोषदुष्टमिदमित्यवज्ञया हातुमिच्छत न जातु साधवः ! ।
शैवलं किल विहाय केवलं निर्मलं किमु न पीयते जलम् ? ॥ ३ ॥

ये पण्डितकुलोत्पन्ना रसवन्तोऽल्पबुद्धयः ।
तदर्थमयमारम्भः किमज्ञातं मनीषिणाम् ? ॥ ४ ॥

*

सन्धावचामज्लोपविशेषा बहुलम् ॥ १ ॥

अचां सन्धावजविशेषा लोपश्च वा स्युः । नदीस्रोतः णइसोत्तो । राम ओ इति स्थिते रामो, अकारलोपः ।

मो बिन्दुः ॥ २ ॥

मस्य अनुस्वारः स्यात् । कण्ह अम् इति स्थिते कण्हं ।

अचि मश्च ॥ ३ ॥

अचि परे मस्य म एव स्यात् । अनुस्वारापवादः । धणम् ओहरइ इति स्थिते धणमोहरइ । 'अनचि मो बिन्दुः' इत्येव सूत्रयितुमुचितम् ।

नञो हलि ॥ ४ ॥

नकार-ञकारयोः अनुस्वारः स्याद् हलि । अन्सः अंसो, अत्र

वक्रादिषु ॥ ५ ॥

एषु अनुस्वारागमः स्यात्। वक्रं वंकं। वक्र त्र्यस्र ह्रस्व अश्रु श्मश्रु गृष्टि मूर्द्धन् मनस्विनी दर्शन स्पर्श वर्ण प्रतिश्रुत् अश्व अभिमुक्त वक्रादिः।

मांसादिषु वा ॥ ६ ॥

एषु वा बिन्दुः स्यात्। संयोगेऽणो ह्रस्व इति वाच्यम्। मांसं मंसं मासं। आकृतिगणोऽयम्।

झयि तद्वर्गान्तः ॥ ७ ॥

तद्वर्गान्तोऽनुस्वारो वा स्याद् झयि। शङ्का संका सङ्का।

॥ इति सन्धिः ॥

*

अत ओत् सोः ॥ ८ ॥

अकारान्तात् परस्य सोः ओत् स्यात् ॥

नो णः सर्वत्र ॥ ९ ॥

यत्र क्वचित् स्थितस्य नस्य णः स्यात्।

क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लोपः ॥ १० ॥

कादीनां नवानामयुक्तानामनादिवर्त्तिनां प्रायो लोपः स्यात्। नारायणः णाराअणो। अयुक्तानामिति किम्? शक्रः सक्को इत्यादि। अनादिवर्त्तिनामिति किम्? कृष्णः कण्हो इत्यादि।

द्विवचनस्य बहुवचनम् ॥ ११ ॥

सुपां तिङां च द्विवचनस्य बहुवचनं स्यात्।

जस्-शसोर्लोपः ॥ १२ ॥

अकारान्तात् परयोः जस्-शसोः लोपः स्यात्।

जस्-शस्-ङसि-आमसु दीर्घः ॥ १३ ॥

एषु अतो दीर्घः स्यात्।

ए च सुप्यङि-ङसोः ॥ १४ ॥

अकारस्य एत्वं स्यात् सुपि, न तु ङि-ङसोः। चाद् दीर्घोऽपि

अकारान्तात् परस्य अमः अकारस्य लोपः स्यात् । नारायणं नाराअणं । ननु 'सन्धावचाम्०' (१) इति अलोपेनैव भाव्यम् इति चेत्, न, तत्र बहुलग्रहणात् क्वचिदप्रवृत्तेरपि सम्भावनीयत्वात् नारायणान् णाराअणा णाराअणे ।

टा-ऽऽमोर्णः ॥ १६ ॥

अकारान्तात् परयोः टा-ऽऽमोः णः स्यात् । नारायणेन णाराअणेण । नारायणानां णाराअणाणं ।

भिसो हिं ॥ १७ ॥

अकारान्तात् परस्य भिसो हिं इत्यादेशः स्यात् । नारायणैः णाराअणेहिं ।

चतुर्थ्याः षष्ठी ॥ १८ ॥

स्यात् । तथा हि ।

स्सो ङसः ॥ १९ ॥

अकारान्तात् परस्य ङसः स्स इत्यादेशः स्यात् । नारायणाय णाराअणस्स । नारायणेभ्यः णाराअणाणं ।

ङसेः आ-दो-दु-हयः ॥ २० ॥

अदन्तात् परस्य ङसेः आ दो दु हि इति प्रत्येकं चत्वार आदेशाः स्युः । नारायणात् णाराअणा णाराअणादो णाराअणादु णारायणाहि 'जस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः ।

भ्यसो हिंतो सुन्तो ॥ २१ ॥

अदन्ताद् भ्यसो हिंतो सुन्तो इत्येतौ आदेशौ स्याताम् । नारायणेभ्यः णाराअणाहिंतो णाराअणासुन्तो । नारायणस्य णाराअणस्स ।

ङेः ए-म्मी ॥ २२ ॥

अदन्ताद् ङि इति सप्तम्येकवचनस्य ए म्मि इत्येतौ स्याताम्

क्वचिद् ङसि-ङ्योर्लोपः ॥ २३ ॥

ङसि-ङ्योः परयोः क्वचिदतो लोपः स्यात् । नारायणे णाराअणे णाराअणम्मि ।

अदन्तात् परस्य सुपः सु इत्यादेशः स्यात् । अत्वापवादः
नारायणेषु णाराअणेसु । 'ए च०' (१४) इति एत्वम् ।

नाऽऽमन्त्रणे सावोत्व-दीर्घत्व-बिन्दवः ॥ २५ ॥

सम्बोधने ओत्व-दीर्घत्वा-ऽनुस्वारा न स्युः ।

अन्त्यस्य हलः ॥ २६ ॥

[अन्त्यस्य हलः] लोपः स्यात् । हे नारायण हे णाराअण ।

रागः राओ । 'क-ग०' (१०) इति गलोपः । रागाः राआ राए 'जस्-शसोः०' (१२) इति लोपः, 'जस्-शस्०' (१३) इति दीर्घः रागम् राअं । रागान् राआ राए । रागेण राएण । रागैः राएहिं । रागाय राअस्स । रागेभ्यः राआणं । रागात् राआ राआदो राआदु राआहि रागेभ्यः राआहिंतो राआसुन्तो । रागस्य राअस्स । रागाणाम् राआणं रागे राए राअम्मि । रागेषु राएसु ।

आदेरतः ॥ २७ ॥

–इत्यधिकृत्य ।

इदीषत्-पक्व-स्वप्न-वेतस-व्यजन-मृदङ्गा-ऽङ्गारेषु ॥ २८ ॥

एषु सप्तसु मध्ये आदेः अतः इः स्यात् ।

उदृत्वादिषु ॥ २९ ॥

एषु ऋतः उः स्यात् । मृदङ्गः मुइंगो । ऋतु मृणाल पृथिवी वृन्दावन प्रावृट् प्रवृत्ति विवृत संवृत निवृत वृत्तान्त परभृत मातृक जामातृक मृदङ्ग इत्यादि ऋत्वादिः ।

विप्रकर्षः ॥ ३० ॥

–इत्यधिकृत्य ।

युक्तस्य ॥ ३१ ॥

–इत्यधिकृत्य ।

इः श्री-ह्री-क्रीत-क्लान्त-क्लेश-म्लान-स्वप्न-स्पर्श-हर्षा-ऽर्ह-गर्हेषु ॥ ३२ ॥

एषु एकादशसु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य इत्वम्, तत्स्वरता च । 'नो याः०' (९) इति णः । स्वप्नः सिविणो इत्यादि । 'उपरि०' (३६) इति वक्ष्यमाणेन पलोपः ।

एषु तस्य डः स्यात् । प्रतिसरः पडिसरो । 'सर्वत्र०' (३४) इति वक्ष्यमाणेन रलोपः । ननु पडिवआ पडिसिद्धि इत्यादौ तस्य डः केन ? इति चेत्, उच्यते, प्रतिसर इत्यत्र प्रतिना सरति प्रतिपूर्वक इति यावद् इति व्याख्यानात्, 'प्रतिसर'शब्दस्यापि प्रतिनैव सरत्वा दिति । वेतसः वेडिसो ।

सर्वत्र लबराम् ॥ ३४ ॥

संयुक्तस्य उपर्यधःस्थितानां लकार-बकार-रेफाणां लोपः स्यात्

शेषा-ऽऽदेशयोर्द्वित्वमनादौ ॥ ३५ ॥

युक्तस्य लोपे जाते यः शेषः आदेशश्च तयोः अनादौ वर्त्तमान योर्द्वित्वं स्यात् । पक्वः पिक्को ।

उपरि लोपः क-ग-ड-त-द-प-ष-साम् ॥ ३६ ॥

कादीनामष्टानां युक्तस्य उपरिस्थितानां लोपः स्यात् । भक्तः भत्तो ।

वर्गेषु युजः पूर्वः ॥ ३७ ॥

'शेषा०' (३५) इति यस्य द्वित्वं क्रियते स द्वितीयः चतुर्थो वा चेत् तत्पूर्वः प्रथमः तृतीयो वा स्यात् । मुग्धः मुद्धो । खड्गः खग्गो । उत्पीतः उप्पीओ । सद्गमः सग्गमो । आप्तः अत्तो । वसिष्ठः वसिट्ठो ।

स्नेहे वा ॥ ३८ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य अत्वं च । स्नेहः सणेहो णेहो ।

आदेर्यो जः ॥ ३९ ॥

शब्दस्य आदिभूतयकारस्य ज-आदेशः स्यात् ।

अधो म-न-याम् ॥ ४० ॥

युक्तस्य अधःस्थितानामेषां लोपः स्यात् । योग्यः जोग्गो ।

ए शय्यादिषु ॥ ४१ ॥

एषु आदेः अकारस्य एत्वं स्यात् । उत्करः उक्केरो । शय्या सौन्दर्य उत्कर त्रयोदश आश्चर्य पर्यन्त वल्ली शय्यादिः ।

अनयोः यूशब्देन सह आदेः अत ओत्व वा स्यात् मयूरः मोरो। मयूखः मोहो। पक्षे 'क-ग०' (१०) इति यलोपः, मऊरो मऊहो।

आ समृद्ध्यादिषु वा ॥ ४३ ॥

अविभक्तिको निर्देशः। 'सविसर्गः पाठः' इति केचित्। एषु आदेः अकारस्य आकारो वा स्यात्। समृद्धि प्रकट अभिजाति मनस्विनी प्रतिपत् सदृक्ष प्रतिस्पर्द्धि प्रसुप्त प्रसिद्धि अश्व। आकृतिगणोऽयम्।

शषोः सः ॥ ४४ ॥

सर्वत्र शस्य षस्य च सः स्यात्। अश्वः आसो अस्सो।

अदातो यथादिषु वा ॥ ४५ ॥

एषु आतः स्थाने वा अत् स्यात्। प्रहारः पहरो पहारो 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः। हालिकः हलिओ हालिओ। यथा तथा प्राकृत तालवृन्त उत्खात चामर प्रहार चाटु दावाग्नि खादित संस्थापित मृगाङ्क हालिक यथादिः।

उद् इक्षु-वृश्चिकयोः ॥ ४६ ॥

अनयोः इत उत् स्यात्।

वृश्चिके ञ्छः ॥ ४७ ॥

युक्तस्य स्यात्। वक्ष्यमाण'श्च-त्स-प्सां ञ्छः' (१२४) इति ञ्छत्वापवादः।

इदृ ऋष्यादिषु ॥ ४८ ॥

एषु ऋकारस्य इत् स्यात्। वृश्चिकः विञ्छुओ। ऋषि वृषी गृष्टि सृष्टि दृष्टि शृङ्गार मृगाङ्क भृङ्ग भृङ्गार हृदय वितृष्ण बृंहित कृशर कृत्या वृश्चिक कृपा शृगाल कृति कृत्ति कृषि ऋष्यादिः। शृङ्गारः सिंगारो। मृगाङ्कः मिअंको, यथादित्वाद् आत अः। भृङ्गः भिंगो भृङ्गारः भिंगारो।

ह्न-स्न-ष्ण-क्ष्ण-श्नां ण्हः ॥ ४९ ॥

एषां ण्हादेशः स्यात्। वितृष्णः वितिण्हो। शृगालः सिआलो

ईत् सिंह-जिह्वयोश्च ॥ ५० ॥

अनयोः इत ईत् स्यात्। सिंहः सीहो।

इद् ईतः पानीयादिषु ॥ ५१ ॥

एषु ईत इत् स्यात्। करीषः करिसो। पानीय अलीक व्रीडित व्यलीक गृहीत तदानीम् करीष द्वितीय तृतीय गभीर पानीयादिः।

एत् नीडा-ऽऽपीड-कीदृगीदृशेषु ॥ ५२ ॥

एषु ईत एत् स्यात्।

आपीडे मः ॥ ५३ ॥

पस्य मः स्यात्। लोपं बाधित्वा प्राप्तस्य 'पो वः' (८९) इति वक्ष्यमाण-व-त्वस्यापवादः। आपीडः आमेलो।

क्वचिद् युक्तस्यापि ॥ ५४ ॥

वर्णान्तरेण युक्तस्यापि ऋकारस्य क्वचिद् रिः स्यात्। 'क-ग (१०) इति द-लोपः। कीदृशः केरिसो। ईदृशः एरिसो।

उत ओत् तुण्डरूपेषु ॥ ५५ ॥

संयुक्तवर्णपरोकारेषु उत ओत् स्यात्।

ष्क-स्क-क्षां क्खः ॥ ५६ ॥

एषां क्खादेशः स्यात्। पुष्करः पोक्खरो।

स्तस्य थः ॥ ५७ ॥

स्यात्। 'उपरि लोपः०' (३६) इत्यस्यापवादः। पुस्तकः पोत्थओ लुब्धकः लोद्धओ। 'उत ओत्०' (५५) इत्यस्य प्रायिकत्वात् लुद्धओ अत्र 'सर्वत्र०' (३४) इति ब-वयोरैक्याद् लोपे शेषस्य धस्य 'शेषा० (३९) इति द्वित्वे दपूर्वो धकारः।

अन्मुकुटादिषु ॥ ५८ ॥

एषु आदेः उतः अत् स्यात्। मुकुट मुकुल गुरु गुर्वी युधिष्ठि सौकुमार्य मुकुटादिः। 'आदेर्यो जः' (३२) इति जः, 'उपरि (३६) इति षलोपः, 'शेषा०' (३९) इति द्वित्वम्।

एषामयुक्तस्य रेफस्य लादेशः स्यात्। युधिष्ठिरः जहिट्ठिलो। हरिद्रा चरण मुखर युधिष्ठिर करुण अङ्गुरी अङ्गार किरात परिखा परिघ हरिद्रादिः। चरणः चलणो। मुखर मुहलो। अङ्गारः इंगालो, 'इद् ईषत्०' (२८) इति इत्वम्।

किराते चः ॥ ६१ ॥

अत्र आदेः चः स्यात्।

ऋत्वादिषु तो दः ॥ ६२ ॥

एषु तस्य दः स्यात्। किरातः चिलादो। ऋतु रजत आगत निर्वृति आकृति संवृति सुकृति हत संयत विवृत सञ्जात सम्प्रति प्रतिपत्ति ऋत्वादिः।

परुष-परिघ-परिखासु फः ॥ ६३ ॥

एषु आदेः फः स्यात्। परुषः फरुसो। परिघः फलिहो। आगतः आअदो। हतः हदो। संयतः संजदो, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः। सम उपसर्गत्वाद् यत इति यकारस्य आदिस्थत्वम्।

इत् पुरुषे रोः ॥ ६४ ॥

अत्र रोः उत इत् स्यात्। पुरुषः पुरिसो। रोरिति किम्? पकाराद् उकारस्य मा भूत्।

अयुक्तस्य रिः ॥ ६५ ॥

वर्णान्तरेण अयुक्तस्य ऋकारस्य रिः इत्यादेशः स्यात्। ऋद्धः रिद्धो।

वृक्षे वेन रुर्वा ॥ ६६ ॥

वृक्षशब्दे वशब्देन सह ऋकारस्य रुः वा स्यात्। व्यवस्थितविभाषेयम्, तेन च्छत्वपक्षे न भवति, खत्वपक्षे तु स्यादेव।

क्षमा-वृक्ष-क्षणेषु वा ॥ ६७ ॥

एषु क्षस्य वा च्छः। पक्षे 'ष्क-स्क०' (५६) इति खः 'ऋतोऽत्' (१२०) इति वक्ष्यमाणेन अकारः। वृक्षः वच्छो रुक्खो।

एत इद् वेदना-देवरयोः ॥ ६८ ॥

अनयोः आदेः एत इर्वा स्यात्। देवरः दिअरो देअरो, 'क-ग' (१०) इति वलोपः।

ऐत एत् ॥ ६९ ॥

आदेः ऐतः एः स्यात्। शैलः सेलो। कैलासः केलासो।

दैत्यादिष्वइः ॥ ७० ॥

दैत्यादिषु ऐकारस्य अइः इत्यादेशः स्यात्॥

त्य-थ्य-द्यां च्च-च्छ-ज्जाः ॥ ७१ ॥

त्रयाणां क्रमेण त्रयः स्युः। दैत्यः दइच्चो। चैत्रः चइत्तो, 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः। भैरवः भइरवो। वैदेशः वइदेसो। वैदेहः वइदेहो। कैतवः कइअवो। वैशाखः वइसाहो, 'ख-घ०' (५९) इति हः। वैशिकः वइसिओ। वैशम्पायनः वइसंपाअणो। दैत्य चैत्र भैरव स्वैर वैर वैदेश वैदेह कैतव वैशाख वैशिक वैशम्पायन दैत्यादिः।

ओतोऽद् वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥ ७२ ॥

प्रकोष्ठशब्दे ओतः अद् वा स्यात्, कस्य च वः स्यात्। प्रकोष्ठः पवट्ठो, 'सर्वत्र०' (३२) इति रलोपः, 'उपरि०' (३६) इति षलोपः, 'शेषा०' (३८) इति द्वित्वम्। पक्षे पओट्ठो, 'क-ग०' (१०) इति कलोपः।

औत ओत् ॥ ७३ ॥

आदेः औकारस्य ओत् स्यात्। पौत्रः पोत्तो।

पौरादिष्वउः ॥ ७४ ॥

एषु औकारस्य अउः इत्यादेशः स्यात्। ओत्वापवादः। पौरः पउरो। कौरवः कउरवो।

कौशले वा ॥ ७५ ॥

कउसलो कोसलो। आकृतिगणोऽयम्।

उत् सौन्दर्यादिषु ॥ ७६ ॥

एषु औकारस्य उत् स्यात्। मौञ्जायनः मुंजाअणो। शौण्डः सुंडो। कौक्षेयकः कुक्खेअओ, 'वर्गेषु०' (३१) इति कः, 'क-ग०' (१०) इति य-कोर्लोपः। सौन्दर्य मौञ्जायन शौण्ड कौक्षेयक दौवारिकादयः सौन्

स्फटिक-चिकुर-निकषेषु कस्य हः ॥ ७७ ॥

एषु ककारस्य हादेशः स्यात्। 'क-ग०' (१०) इति कलोपापवादः

स्फटिके लः ॥ ७८ ॥

अत्र टस्य लः स्यात्। 'टो डः' (८८) इति वक्ष्यमाणस्यापवादः। 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, स्फटिकः फलिहो। चिकुरः चिहुरो। निकषः णिहसो, 'नो णः०' (९) इति णत्वम्, 'शषोः०' (४४) इति सः।

सीकरे भः ॥ ७९ ॥

अत्र कस्य भः स्यात्। 'क-ग०' (१०) इत्यस्यापवादः। सीकरः सीभरो।

गर्भिते णः ॥ ८० ॥

तस्य णः स्यात्। गर्भितः गब्भिणो।

वसति-भरतयोर्हः ॥ ८१ ॥

अनयोः तस्य हः स्यात्। लोपापवादः। भरतः भरहो।

ऐरावते च ॥ ८२ ॥

अत्र तस्य णः स्यात्। लोपापवादः। ऐरावतः एरावणो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत्।

प्रदीप्त-कदम्ब-दोहदेषु दोलः ॥ ८३ ॥

एषु अनादिभूतस्य दस्य लः स्यात्। कदम्बः कलंबो। दोहदः णोहलो। अनेति (अनादीति) किम्? आद्यस्य मा भूत्। 'दोहदे णः' (९७) इति वक्ष्यमाणेन णः।

गद्गदे रः ॥ ८४ ॥

अत्र अयुक्तस्य दस्य रः स्यात्। 'उपरि०' (३६) इति दलोपः, गद्गदः गग्गरो।

पो वः ॥ ८५ ॥

पस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य वः स्यात्। शपथः सवहो, 'ख-घ०' (५९) इति हः। ननु पस्य लोपोक्तेः कथं पस्य वविधिः? इति चेत्, उच्यते, लोपविधौ 'प्रायः' (सू० १०) इत्युक्तेः यत्र लोपाभावस्तत्रैव अस्य प्रवृत्तिः।

उत्तरीया-ऽनीययोर्यस्य जो वा ॥ ८६ ॥

उत्तरीयशब्दस्य अनीयप्रत्ययस्य च यो यकारः तस्य जो वा
रमणीयः रमणिज्जो ।

कबन्धे बो मः ॥ ८७ ॥

अत्र बस्य मः स्यात् । लोपापवादः । कबन्धः कमंधो ।

टो डः ॥ ८८ ॥

टस्य अयुक्तस्य अनादिभूतस्य डः स्यात् । विटपः विडवो ।

सटा-शकट-कैटभेषु ढः ॥ ८९ ॥

एषु टस्य ढः स्यात् । डापवादः । शकटं सअढो ।

कैटभे वः ॥ ९० ॥

भस्य वः स्यात् । कैटभः केढवो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत् ।

फो भः ॥ ९१ ॥

स्यात् । सफलः सभलो ।

प्रथम-शिथिल-निषधेषु ढः ॥ ९२ ॥

एषु थ-धयोः ढादेशः स्यात् । हापवादः । प्रथमः पढमो । शि
सिढिलो । निषधः णिसढो ।

कुब्जेः खः ॥ ९३ ॥

अत्र आदेः वर्णस्य खादेशः स्यात् । कुब्जः खुज्जो ।

दोला-दण्ड-दशनेषु डः ॥ ९४ ॥

एषां आदेः डः स्यात् । दण्डः डंडो । दशनः डसणो ।

मन्मथे वः ॥ ९५ ॥

अत्र आदेः वः स्यात् ।

न्मो म्मः ॥ ९६ ॥

स्यात् । मन्मथः वम्महो, 'ख-घ०' (५९) इति हः ।

दोहदे णः ॥ ९७ ॥

अत्र आदेः णः स्यात् । दोहदः णोहलो ।

लाहल-लाङ्गल-लाङ्गुलेषु वा णः ॥ ९८ ॥

एषु आदेः छः स्यात्। षण्मुखः छम्मुहो। शावकः छावओ। सप्तपर्णः छत्तवण्णो, 'पो वः' (८९) इति वत्वम्, 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः।

दशादिषु हः ॥ १०० ॥

एषु शस्य हः स्यात्।

सङ्ख्यायां च ॥ १०१ ॥

सङ्ख्यावाचिशब्दसम्बन्धिदकारस्य रः स्यात्। एकादशः एआरहो द्वादशः बारहो। त्रयोदशः तेरहो, शय्यादित्वाद् एत्।

संज्ञायां वा ॥ १०२ ॥

संज्ञायां दशादेः शस्य हो वा स्यात्। दशमुखः दहमुहो दसमुहो। दशरथः दहरहो दसरहो।

दिवसे सस्य ॥ १०३ ॥

हः स्याद् वा। दिवसः दिअहो दिअसो।

द्रे रो वा ॥ १०४ ॥

द्रशब्दे रेफस्य लोपो वा स्यात्। इंद्रः इंदो इंद्रो। द्रुतः दुओ द्रुओ।

सर्वज्ञतुल्येषु अस्य ॥ १०५ ॥

सर्वज्ञ इत्येवमाकृतिषु अस्य लोपः स्यात्। सर्वज्ञः सव्वज्जो। अत्र ज्ञे जकारञकारयोर्मध्ये ञकारलोपे 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम्। जानातेर्यानि सोपपदानि रूपाणि तत्रायं लोपः।

मध्याह्ने हस्य ॥ १०६ ॥

लोपः स्यात्। वक्ष्यमाणोर्द्ध्वस्थितेः (१०८) अपवादः॥

ध्य-ह्योर्झः ॥ १०७ ॥

स्यात्। मध्याह्नः मज्झण्णो।

ह्न-ह्ल-ह्मेषु न-ल-मां स्थितिरूर्ध्वम् ॥ १०८ ॥

एषु त्रिषु अधःस्थितानां नकार-लकार-मकाराणां त्रिभ्य उपरि स्थितिः स्यात्। प्रह्लादः पल्हादो। अत्र ह्नग्रहणं चिन्त्यम्, 'ह्न-स्न-ष्ण०' (४९) इति ण्हादेशो नस्य स्वयमेव उपरिष्टाद् (१०६) भूतत्वात् कौस्तुभः कोत्थुहो, 'औत ओत्' (७३) 'स्तस्य थः' (५७) 'ख-घ०' (५९) इति हः।

स्तस्य थो न स्यात्। 'उपरि०' (३६) इति सलोपः। तः इति पाठान्तरम्। स्तम्बः तंबो।

स्तम्भे खः ॥ ११० ॥

स्तस्य खः स्यात्। थापवादः। स्तम्भः खंभो।

स्फोटके ॥ १११ ॥

अत्र युक्तस्य खः स्यात्। स्फोटकः खोडओ, 'टो डः' (८८) इति डः।

र्य-शय्या-ऽभिमन्युषु जः ॥ ११२ ॥

र्य इत्येतस्य शय्या-ऽभिमन्युशब्दयोश्च युक्तस्य जः स्यात्। कार्यं कज्जो।

सूर्ये वा ॥ ११३ ॥

सूर्यशब्दे युक्तस्य र-ज्जौ वा स्याताम्।

न र-होः ॥ ११४ ॥

रेफ-हकारयोर्द्वित्वं न स्यात्। सूर्यः सूरो सुज्जो।

र्त्तस्य टः ॥ ११५ ॥

स्पष्टम्। कैवर्त्तः केवट्टो, 'ऐत एत्' (६९) इति एत्।

न धूर्त्तादिषु ॥ ११६ ॥

एषु र्त्तस्य टो न स्यात्। धूर्त्तः धुत्तो, 'सर्वत्र०' (३४) इति रलोपः। आवर्त्तः आवत्तो। संवर्त्तः संवत्तो। निवर्त्तः णिवत्तो। आर्त्तः अत्तो। धूर्त्त कीर्त्ति वर्त्तमान वर्त्त आवर्त्त संवर्त्त निवर्त्त वर्त्तिका आर्त्त कर्त्तरी मूर्त्ति धूर्त्तादिः।

गर्त्ते डः ॥ ११७ ॥

र्त्तस्य डः स्यात्। गर्त्तः गड्डो।

---

१ अत्रायमाशयः — यथा "न स्तम्बे" इति सूत्रपाठो दृश्यते तथा ग्रन्थान्तरेषु "तः स्तम्बे" इत्यपि सूत्रपाठो दृश्यत इति।

एषु क्षस्य छः स्यात्। क्षुब्धः छुद्धो। उत्क्षिप्तः उच्छित्तो। 'उपरि०' (३६) इति पलोपः। सदृक्षः सरिच्छो, 'क-ग०' (१०) इति दलोपः, ऋ रिः। ऋक्षः रिच्छो। अक्षि लक्ष्मी क्षुण्ण क्षीर क्षुब्ध उत्क्षिप्त सदृक्ष इक्षु उक्षा क्षार ऋक्ष मक्षिका क्षुर क्षुत क्षेत्र वक्ष उदक्ष कुक्षि कक्षा रक्षा अक्ष्यादिः। क्षणः छणो खणो।

ष्म-यक्ष्म-विस्मयेषु म्हः ॥ ११९ ॥

ष्म इत्यस्य यक्ष्म-विस्मययोश्च युक्तस्य म्हादेशः स्यात्। विस्मयः विम्हओ। स्नातः ण्हाओ, 'ह्न-स्न०' (४९) इति ण्हादेशः।

ऋतोऽत् ॥ १२० ॥

ऋत आदेः अत् स्यात्। कृष्णः कण्हो। प्रश्नः पण्हो।

इत एत् पिण्डसमेषु ॥ १२१ ॥

एषु इकारस्य एत्वं स्यात्। समग्रहणं संयोगपरमुपलक्षयति। विश्नः वेण्हो।

स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य ॥ १२२ ॥

फः स्यात्। स्पन्दः फंदो। निस्पन्दः णिप्फंदो।

बाष्पेऽश्रुणि हः ॥ १२३ ॥

बाष्पशब्दे ष्पस्य हः स्यात्, अश्रुणि वाच्ये। बाष्पः बाहो, 'न र-होः' (११४) इति द्वित्वनिषेधः। अश्रुणि किम्? बाष्पः बाफो ऊष्मा, वक्ष्यमाणः 'ष्पस्य फः' (२०६)।

कार्षापणे ॥ १२४ ॥

युक्तस्य हादेशः स्यात्। कार्षापणः कहावणो, 'पो वः' (८९) इति वः।

श्च-त्स-प्सां छः ॥ १२५ ॥

त्रयाणां छः स्यात्। पाश्चात्यः पच्छत्तो। वत्सः वच्छो। ईप्सितः इच्छिओ।

नोत्सुकोत्सवयोः ॥ १२६ ॥

अनयोः त्सस्य छादेशो न स्यात्। उत्सुकः ऊसुओ। उत्सवः ऊसवो।

म्न-ज्ञ इत्येतयोः पञ्चाशत्-पञ्चदशशब्दयोश्च युक्तस्य णः स्यात्, प्रद्युम्नः पज्जुण्णो, 'त्य-थ्य०' (७१) इति ज्जः। यज्ञः जण्णो।

भिन्दिपाले ण्डः ॥ १२८ ॥

युक्तस्य ण्डः स्यात्। भिन्दिपालः भिंडिवालो, 'पो वः' (८५) इति वः।

विह्वले म्भ-हौ वा ॥ १२९ ॥

युक्तस्य एतौ वा स्याताम्। विह्वलः विंभलो विहलो।

न बिन्दुपरे ॥ १३० ॥

अनुस्वारात् परस्य द्वित्वं न स्यात्। सङ्क्रान्तः संकंतो।

समासे वा ॥ १३१ ॥

समासे शेषा-ऽऽदेशयोर्वा द्वित्वं स्यात्। 'शेषा०' (३५) इत्यत्र 'अनादौ' इत्युक्तेः अप्राप्तविभाषेयम्, अन्तर्वर्त्तिनीं विभक्तिमाश्रित्य पदादित्वात्। छायाग्रामः छायग्गामो छाहागामो, 'छायायां हः' (१६८) इति वक्ष्यमाणेन हः।

सेवादिषु ॥ १३२ ॥

एषु अनादौ स्थितस्य हलो द्वित्वं वा स्यात्। निहितः णिहित्तो णिहिओ, 'न र-होः' (११४) इति निषेधाद् न हस्य द्वित्वम्। तूष्णीकः तुण्हिक्को तुण्हिओ, 'ह्न-ष्ण०' (४९) इति ण्हः। दुःखितः दुक्खिओ, पक्षे 'ख-घ०' (५९) इति हः, दुहिओ। द्वित्वपक्षे 'वर्गेषु' (३९) इति कः। विश्रामः वीसामो विस्सामो। निःश्वासः णिस्सासो णीसासो। पुष्यः पुस्सो पूसो। सेवा एक नख दैव अशिव त्रैलोक्य निहित तूष्णीक कर्णिकार दीर्घरात्रि दुःखित अश्व ईश्वर विश्राम निःश्वास रश्मि मित्र पुष्य सेवादिः। उभयत्र विभाषेयम्, सेवादीनामप्राप्ते दीर्घादीनां 'शेषा०' (३५) इति प्राप्ते।

कृष्णे वा ॥ १३३ ॥

अत्र युक्तस्य विप्रकर्षो वा स्यात्, पूर्वस्य तदच्कता च। कृष्णः किसणो कण्हो। व्यवस्थितविभाषेयम्, तेन वर्णवाचके विप्रकर्षः, भगवति न इति।

लोपः। अनुवर्त्तमानः अणुअत्तमाणो। यावत् तावत् पारावत अनु-वर्त्तमान जीवित एवं एव अवट देवकुल यावदादिः। आकृतिगणोऽयम्। सर्वः सव्वो।

सर्वादेर्जस एत्वम् ॥ १३५ ॥

स्पष्टम्। सर्वे सव्वे। सर्वं सव्वं। सर्वान् सव्वा। सर्वेण सव्वेण। सर्वैः सव्वेहिं। सर्वस्मै सव्वस्स। सर्वेभ्यः सव्वाणं। सर्वस्मात् सव्वा सव्वादो सव्वादु सव्वाहि, 'ङसेः०' (२०) इत्यादेशाः। सर्वेभ्यः सव्वाहिंतो सव्वासुत्तो। सर्वस्य सव्वस्स। सर्वेषाम् सव्वाणं।

ङेः स्सिं-म्मि-त्थाः ॥ १३६ ॥

सर्वादेः परस्य ङेः इति सप्तम्येकवचनस्य स्सिं म्मि त्थ इति त्रय आदेशाः स्युः। सर्वस्मिन् सव्वस्सिं सव्वम्मि सव्वत्थ। सर्वेषु सव्वेसु। विश्वः विस्सो। उभौ उहे। उभशब्दस्य द्विवचनान्तत्वाद् द्विवचनस्य बहुवच-नादेशः। संस्कृते प्रसिद्धः सर्वादिः॥

शेषोऽदन्तवत् ॥ १३७ ॥

शेषस्तु विधिः अदन्तवत् स्यात्। तेन आकारान्तादपि 'अत ओत सोः' (८) इत्यादि विधिः प्रवर्त्तते। विश्वपाः विस्सवो इत्यादि।

सु-भिस्-सुप्सु दीर्घः ॥ १३८ ॥

इदुदन्तयोः दीर्घः स्याद् एषु परेषु। 'अन्त्यस्य हलः' (२६) इति सोर्लोपः, अग्निः अग्गी। 'अधो०' (४०) इति न लोपः।

जस ओश्च यूत्वम् ॥ १३९ ॥

इदुदन्तयोः परस्य जस ओ इत्यादेशः स्याद् णो च, पूर्वस्य ईकारो-कारौ च स्याताम्। अग्नयः अग्गीओ अग्गीणो। पाठान्तरे तु—

जस ओ वो वाऽत्वं यूत्वं च ॥ १४० ॥

इदुदन्तयोः शब्दयोर्जसः ओ वो इत्येतावादेशौ स्याताम्, अत्वम् ईत्वम् ऊत्वं च विकल्पेन स्यात् णो च। पक्षे अदन्तवत्। अग्नयः अग्गीओ अग्गीवो अग्गीणो अग्गओ अग्गवो अग्गी। हे अग्ने हे अग्गि। अग्निं अग्गिं।

टा णा ॥ १४१ ॥

इदुदन्तयोः टाया णा इत्यादेशः स्यात्। अग्निना अग्गिणा।

न ङि-ङस्योरेदातौ ॥ १४२ ॥

इदुदन्तयोः परयोः ङि-ङस्योः एत् आत् इत्येतौ न स्याताम्। अग्नेः अग्गीदो अग्गीदु अग्गीहि। ङि-ङस्योरिति किम्? समृद्ध्या समिद्धीए समिद्धीआ। 'टा-ङस्-ङीनाम्' (१६०) इति एत्-आतौ।

ए भ्यसि ॥ १४३ ॥

इदुदन्तयोः भ्यसि एत्वं न स्यात्। अग्निभ्यः अग्गीहिंतो अग्गीसुत्तो।

ङसो वा ॥ १४४ ॥

इदुदन्तयोः ङसो णो वा स्यात्। पक्षे 'शेषो०' (१३७) इत्यतिदेशात् 'ङसः स्सः' (१९) इति स्सः। अग्नेः अग्गीणो [अग्गिस्स]। अग्नीनाम् अग्गीणं। अग्नौ अग्गिम्मि। अग्निषु अग्गीसु। ऋषिः इसी, 'इदृ ऋष्यादिषु' (४८) इति इत्वम्।

बृहस्पतौ ब-होर्भ-औ ॥ १४५ ॥

अत्र बकार-हकारयोः क्रमेण भकाराकारौ स्याताम्। बृहस्पतिः भअप्पई, 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, 'शेषा०' (३५) इति द्वित्वम्, 'क-ग०' (१०) इति तलोपः, 'सु-भिस्०' (१३८) इति दीर्घः। गृहपतिः, गहवई, 'पो वः' (८५) इति वः॥ द्विशब्दो नित्यं द्विवचनान्तः।

द्वेर्दुवे दोणि वा ॥ १४६ ॥

द्विशब्दस्य जसा शसा च सह दुवे दोणि इत्येतावादेशौ स्याताम्। द्वौ दुवे दोणि।

द्वेर्दो ॥ १४७ ॥

द्विशब्दस्य दो अयमादेशः स्यात् सुपि। द्वाभ्याम् दोहिं। द्वाभ्याम् दोहिंतो दोसुत्तो।

एषामामो ण्हं ॥ १४८ ॥

द्वि-त्रि-चतुरामामो ण्हं इत्यादेशः स्यात्। णापवादः। द्वयोः दोण्हं द्वयोः दोसु। त्रिशब्दो नित्यं बहुवचनान्तः।

तिण्णि जस्-शस्भ्याम् ॥ १४९ ॥

जसा शसा च सह त्रिशब्दस्य तिण्णि इत्यादेशः स्यात् । त्रयः तिण्णि ।

त्रेस्ती ॥ १५० ॥

त्रिशब्दस्य ती इत्यादेशः स्यात् सुपि । त्रिभिः तीहिं । त्रिभ्यः तीहिंतो तीसुन्तो । त्रयाणाम् तीण्हं त्रिषु तीसु । सखा सही । सखायः सहीओ सहीणो । हे सहि । सखायम् सहिं । सखीन् सहिणो इत्यादि । पतिः पई । 'इत एत्०' (१२१) इति एत्, विष्णुः वेण्हू । जह्नुः जण्हू । इक्षुः उच्छू, 'उदू इक्षु०' (४६) इति उत्वम्, अक्ष्यादित्वात् छः । ऋतुः उदू, 'उदू ऋत्वादिषु' (२९) इति उत्वम्, 'ऋत्वादिषु०' (६२) इति दः ।

स्थाणावहरे ॥ १५१ ॥

युक्तस्य खादेशः स्यात्, न तु हरे अभिधेये । स्थाणुः खाणू । हर-वाचके तु थाणू, 'उपरि०' (३६) इति सलोपः, विष्णुवत् । 'र्य-शय्या०' (११२) इति जः, अभिमन्युः अहिमज्जु । करेणुः सूर्यः करेणू सुज्जो ।

ऋत आरः सुपि ॥ १५२ ॥

ऋकारस्य आरः स्यात् सुपि । भर्ता भत्तारो ॥

उर्जस्-शस्-टा-ङस्-सुप्सु वा ॥ १५३ ॥

जसि शसि टायां ङसि सुपि च ऋकारस्य स्थाने उर्वा स्यात् । आरापवादः । भर्तारः भत्तारा भत्तूओ भत्तुणो, 'जस ओः०' (१३९) इति ओत्वं णो च । हे भर्तः हे भत्तारा । भर्तॄन् भत्तुणो, 'इदुतोः०' (१४०) इति णो । भर्त्रा भत्तुणा भत्तारेण । भर्तृभिः भत्तारेहिं । भर्तुः भत्तुस्स भत्तारस्स । भर्तॄणां भत्ताराणं । भर्तरि भत्तारम्मि । भर्तृषु भत्तुसु भत्तारेसु ।

पितृ-भ्रातृ-जामातॄणामरः ॥ १५४ ॥

एषाम् ऋत अरः स्यात् सुपि । आरापवादः ।

आच्च सौ ॥ १५५ ॥

पित्रादीनाम् आत स्यात् सौ परे । पिता पिआ पिअरो इत्यादि । भ्राता भाआ भाअरो । जामाता जामाआ जामाअरो इत्यादि ।

इत्यजन्ताः पुंलिङ्गाः ॥

पक्षे यथालिङ्गम्। प्रश्नः पण्हा। शय्या सेज्जा, 'ए शय्यादिषु'(४१ इति एत्वम्, 'र्य शय्या०' (११२) इति जः।

जसो वा ॥ १५७ ॥

स्त्रियां तिष्ठतो जस उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम्। शय्या सेज्जाउ सेज्जाओ सेज्जा।

अमि ह्रस्वः ॥ १५८ ॥

स्त्रीवाचकस्य ह्रस्वः स्याद् अमि परे। शय्याम् सेज्जं।

स्त्रियां शस उदोतौ ॥ १५९ ॥

स्त्रीलिङ्गे वर्त्तमानस्य शस उत् ओत् इत्येतावादेशौ स्याताम्। शय्या सेज्जाउ सेज्जाओ।

टा-ङस्-ङीनामिदेददातः ॥ १६० ॥

स्त्रीवाचकात् परेषां टा ङस् ङि इत्येतेषां इत् एत् अत् आत् एतं आदेशाः स्युः। इति चतुर्ष्वपि प्राप्तेषु –

नाऽऽतोऽदातौ ॥ १६१ ॥

स्त्रीवाचकादाकारान्तात् शब्दात् परेषां टा-ङस्-ङीनाम् अत्-आतौ न स्याताम्। शय्यया सेज्जाइ सेज्जाए। शय्याभिः सेज्जाहिं। शय्यायाः सेज्ज सेज्जादो सेज्जादु सेज्जाहि। शय्याभ्यः सेज्जाहिंतो सेज्जासुत्तो।

ङसो वा ॥ १६२ ॥

ङसः स्त्रियाम् उ ओ इत्येतावादेशौ वा स्याताम्। शय्यायाः सेज्जाउ सेज्जाओ सेज्जस्स (?) सेज्जाइ सेज्जाए। शय्यानाम् सेज्जाणं। शय्यायाम सेज्जाइ सेज्जाए। शय्यासु सेज्जासु।

स्त्रियामात एत् ॥ १६३ ॥

सम्बुद्धौ स्त्रियाम् आत एत्वं स्यात् सौ। हे शय्ये हे सेज्जे, 'अन्त्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः।

लवण-नवमल्लिकयोर्वेन ॥ १६४ ॥

लवण-नवमल्लिकयोः आदेः अतो वकारेण सह ओकारः स्यात्। नवमल्लिका णोमल्लिआ। मल्लिका इत्येतदुपलक्षणम्, तेन नवफलिका

णोभलिआ इति सिद्धम्। निद्रा णेद्दा णेद्रा, 'द्रे रो वा' (१०४) इति व
रलोपः, 'इत एत्०' (१२१) इति एत्वम्। हे णेद्दे इत्यादि।

अत् पथि-हरिद्रा-पृथिवीषु ॥ १६५ ॥

एषु इतो अत् स्यात्। हरिद्रा हलद्दा हलद्रा, 'हरिद्रादीनां०' (६०)
इति रेफस्य लः। जिह्वा जीहा, 'ईत् सिंह०' (५०) इति ईत्वम्
"सर्वत्र०" (३४) इति वलोपः। मुक्ता मोत्ता, 'उत ओत्' (५५) इति
ओत्वम्। घृणा घणा, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत्। कृशरा किसरा
कृत्या किच्चा, 'त्य-थ्य०' (७१) इति च्चः। कृपा किवा, 'पो वः' (८५)
इति वः। त्रिष्वपि 'ऋतोऽत्' (१२०) इति अत्वे प्राप्ते ऋष्यादित्वाद्
इत्वम्। वेदना विअणा वेअणा, 'क-ग०' (१०) इति दलोपः, 'नो णः'
(९) इति णः।

यमुनाया मस्य ॥ १६६ ॥

लोपः स्यात्। यमुना जउणा, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः।

चन्द्रिकायां मः ॥ १६७ ॥

कस्य मः स्यात्। चन्द्रिका चन्दिमा, 'सर्वत्र०' (३४) इति
रलोपः। पताका पडाआ, 'प्रतिसर०' (३३) इति तस्य डः, 'क-ग०'
(१०) इति कलोपः।

छायायां हः ॥ १६८ ॥

यस्य हः स्यात् छाया छाहा। रमणीया रमणिज्जा, 'उत्तरीया०'
(८६) इति जः, 'शेषादेशः' (३५) इति द्वित्वम्। सटा सढा। राधा
राहा। सभा सहा। शोभा सोहा। परिखा फलिहा, हरिद्रादित्वाद् लः,
'परुष०' (६३) इति फः, 'ख-घ०' (५९) इति हः। दोला डोला,
'दोला-दण्ड०' (९४) इति डः। निशा णिसा।

स्नुषायां ण्हः ॥ १६९ ॥

षस्य ण्हः स्यात्। स्नुषा सोण्हा, तुण्डरूपत्वाद् उत ओत्वम्।
उल्का उक्का, 'सर्वत्र०' (३४) इति ललोपः। वार्त्ता वत्ता, 'र्त्तस्य टः'
(११९) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वान्न। वर्त्तिका वत्तिआ, पूर्ववत्। सन्ध्या
संझा, 'ध्य-ह्योर्झः' (१०१) इति झः। ...

इति चः। मिथ्या मिच्छा। विद्या विज्जा। क्षुणा छुणा। उक्षा उच्छा। मक्षिका मच्छिआ। कक्षा कच्छा। रक्षा रच्छा। पञ्चस्वपि अक्ष्यादित्वात् छः 'वर्गेषु०' (३७) इति चः। क्षमा छमा खमा, 'क्षमा-वृक्ष०' (६७) इति छत्ववैकल्प्यात् पक्षे 'ष्क-स्क०' (५६) इति खः। 'श्च-त्स-प्सां च्छः' (१२३) पश्चिमा पच्छिमा। वितत्सा विइच्छा (?)। लिप्सा लिच्छा। जुगुप्सा जुउच्छा, 'प्रायः' (१०) इत्युक्तेर्लोपाभावपक्षे जुगुच्छा। मूर्च्छा मुच्छा, "वर्गेषु०" (३७) इति चः।

आङो ज्ञादेशस्य ॥ १७० ॥

'म्न-ज्ञ०' (१२७) इति जातो यो णादेशः तस्य आङः परस्य द्वित्वं न स्यात्। आज्ञा आणा। सेवा सेव्वा सेवा, 'सेवादिषु' (१३२) इति द्वित्वम्।

क्लिष्ट-श्लिष्ट-रत्न-क्रिया-शार्ङ्गेषु तत्स्वरवत् पूर्वस्य ॥ १७१ ॥

एषु युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्। विप्रकर्षितव्यस्य विप्रकर्षे जाते यः पूर्वो वर्णो निरर्थकस्तस्य विप्रकर्षितव्यस्वरता स्यात्। क्रिया किरिआ।

अः क्ष्मा-श्लाघयोः ॥ १७२ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्याकारः तत्स्वरता च। क्ष्मा खमा। विप्रकर्षितव्यस्य दीर्घत्वादीर्घत्वे प्राप्ते ह्रस्वो अकारो विधीयते। 'ष्क-स्क०' (५६) इति खः। श्लाघा सलाहा, 'श-षोः०' (४४) इति सः, 'ख-घ०' (५९) इति हः।

ज्यायामीत् ॥ १७३ ॥

युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य ईकारः। ज्या जीआ अत्राप्याकारे प्राप्ते ईकारो विधीयते। ज्येत्यत्र विप्रकर्षकरणात् पूर्वम् 'अधो म-न-याम्' (४०) इति यलोपः, ततो घचेत् 'कग०' (१०) इति। माला माला। शाला साला।

आदीतौ बहुलम् ॥ १७४ ॥

स्त्रियामकारान्तादातः स्थाने आत् ईत् इत्येतौ बहुलं स्तः। सहमाना सहमाणा सहमाणी। वेपमाना वेवमाणा वेवमाणी। हरिद्रा हलद्दा(द्दा) हलद्दी। सूर्पनखा सुप्पणहा सुप्पणही। छाया छाहा छाही। का की। जा जी। ता ती। प्रश्नः पण्ही। समृद्धिः समिद्धी सामिद्धी, 'आ समृद्ध्या०' (४३) इति वा आकारः, ऋष्यादित्वाद् इः, 'सु-भिस्०' (१३८) इति दीर्घः। अभिजातिः आहिआई अहिआई 'ख-घ०' (५९) इति हः

ष्टस्य ठः ॥ १७५ ॥

ष्ट इत्यस्य ठकारः स्यात् । गृष्टिः गिट्ठी । दृष्टिः दिट्ठी । सृष्टिः सिट्ठी । चतुर्ष्वपि ऋष्यादित्वाद् इत्वम् । आकृतिः आइदी; ऋष्यादित्वाद् इः; आउदी, ऋत्वादित्वाद् उः । सुकृतिः सुइदी, ऋष्यादौ कृतिशब्दपाठात् । संवृतिः संवुदी । प्रतिपत्तिः पदिवत्ती, 'प्रतिसर०' (३३) इति तु न, ऋत्वादिपाठेन बाधात् । वसतिः वसही, 'वसति-भरत०' (८१) इति हः ।

यष्ट्यां लः ॥ १७६ ॥

आदेर्लः स्यात् । 'आदेर्यो जः' (३९) इति जापवादः । यष्टिः लट्ठी । कीर्त्तिः कित्ती, 'र्त्तस्य टः' (११५) इति टे प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । मूर्त्तिः मुत्ती । वितर्दिः विअड्डी । विच्छर्दिः विच्छड्डी । उभयत्रापि 'गर्दभ०' (?) इति डः, 'शेषा-ऽऽदेश०' (३५) इति द्वित्वम् । कुक्षिः कुच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः । स्थितिः थिई । मनस्विनी मणंसिणी, समृद्ध्यादित्वाद् वा आकारः, वक्रादित्वादनुस्वारः ।

ईदूतोर्ह्रस्वः ॥ १७७ ॥

सम्बुद्धौ । [हे मनस्विनि] हे माणंसिणि । मनस्विनीम् माणंसिणिं, 'अमि ह्रस्वः' (१५८) इति ह्रस्वः । वल्ली वेल्ली, शय्यादित्वाद् एकारः ।

चतुर्थी-चतुर्दश्योस्तुना ॥ १७८ ॥

अनयोस्तुशब्देन सह आदेः अतः ओत्वं वा स्यात् । चतुर्थी चोत्थी चउत्थी । चतुर्दशी चोद्दही चउद्दही । 'दशादिषु०' (१००) इति हः । पृथिवी पुहवी, ऋत्वादित्वाद् उः, 'अत् पथि०' (१६५) इति अः ।

उः पद्म-तन्वीसमेषु ॥ १७९ ॥

पद्मशब्दे तन्वी इत्येवंरूपेषु च युक्तस्य विप्रकर्षः स्यात्, पूर्वस्य उकारः । गुर्वी गरुई, मुकुटादित्वाद् अः । शफरी सभरी, 'श-षोः सः' (४४) 'फो भः' (९१) । अङ्गुरी अङ्गुली, 'हरिद्रादीनां०' (६०) इति रेफस्य लः ।

बिसिन्यां भः ॥ १८० ॥

आदेः । बिसिनी भिसिणी । स्त्रीलिङ्गनिर्देशः किम् ? बिसं । षष्ठी छट्ठी, 'षट्-शावक०' (९९) इति छः । सप्तमी सत्तमी । कर्त्तरी कत्तरी, "र्त्तस्य टः"(११५) इति प्राप्ते धूर्त्तादित्वाद् न । लक्ष्मी लच्छी, अक्ष्यादित्वात् छः ।

पः स्यात्। रुक्मिणी रुप्पिणी। श्रीः सिरी। ह्रीः हिरी, 'इः श्री-ह्री॰' (३२) इति विप्रकर्ष-यौ। लघ्वी लहुई, 'ख-घ॰' (५९) इति हः, 'उ पद्म॰' (१७९) इति विप्रकर्षः। तन्वी तणुई। नदी नई। हे नइ। पृष्ठं पुट्ठी। अक्षि अच्छी। वधूः वहू। हे वहु इत्यादि।

मातुरात् ॥ १८२ ॥

मातृशब्दसम्बन्धिन ऋकारस्य आत् स्यात्। माता माआ। हे मा इत्यादि।

॥ इति अजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

लोपोऽरण्ये ॥ १८३ ॥

आदेरतः।

सोर्बिन्दुर्नपुंसके ॥ १८४ ॥

नपुंसके तिष्ठतः सोः अनुस्वारः स्यात्। अरण्यं रण्णं।

इज्जस्-शसोर्दीर्घश्च ॥ १८५ ॥

नपुंसके वर्त्तमानयोः जस्-शसोः इदादेशः स्यात्, पूर्वस्य दीर्घश्च अरण्यानि रण्णाइं। अरण्यं रण्णं। अरण्यानि रण्णाइं। अरण्येन रण्णेण पुंवत्। हे अरण्य हे रण्ण, 'नाऽऽमन्त्रणे॰' (२५) इति निषेधाद् बिन्दुर्न, किन्तु 'अन्त्यस्य॰' (२६) इति सोर्लोपः।

ओ बदरे देन ॥ १८६ ॥

अत्र दकारेण सह आदेरत ओत्वं स्यात्। बदरं बोरं इत्यादि।

उदूखले द्वा वा ॥ १८७ ॥

अत्र दूशब्देन सह आदेः ओद् वा स्यात्। उदूखलं ओखलं उदूहलं।

उलूहले ल्वा वा ॥ १८७A ॥

उलूहलशब्दे लू शब्देन सह आदेः उकारस्य ओकारो वा स्यात्। उलूहलंओहलं। इति पाठान्तरम्।

उदूतो मधूके ॥ १८८ ॥

अत्र मधूकशब्दे ऊकारस्य उत् स्यात्। मधूकं महुअं।

अद् दुकूले वा लस्य द्वित्वम् ॥ १८९ ॥

दुकूलशब्दे ऊकारस्य अकारो वा स्यात्, तत्सन्नियोगेन च लस्य द्वित्वम्। दुकुलं दुअल्लं दुऊलं।

एन्नूपुरे ॥ १९० ॥

नूपुरशब्दे ऊकारस्य एत् स्यात्। अत्र 'आदेः' इति प्रयोजनाभावाद् नानुवर्त्तते । नूपुरं णेउरं। ऋणं रिणं, 'ऋ रिः' (?) इति रि । हृदयं हिअयं, ऋष्यादित्वाद् इः। वृन्दावनं वुंदावणं, 'ऋतोऽत्' (१२०) इति प्राप्ते ऋत्वादित्वाद् उः।

ऌतः क्लृप्त इलि ॥ १९१ ॥

क्लृप्तशब्दे ऌकारस्य इलिः स्यात्। क्लृप्तं किलित्तं। त्रैलोक्यं तेल्लोक्कं, 'ऐत् एत्' (६९) इति एत्, सेवादित्वात् द्वित्वम्, द्वित्ववैकल्प्यात् पक्षे तेलोक्कं। शैत्यं सेत्तं। स्वैरं सइरं। वैरं वइरं। द्वयोरप्यैकारस्य 'दैत्यादिषु०' (६८) इति अइः।

दैवे वा ॥ १९२ ॥

दैवशब्दे ऐकारस्य अइरित्यादेशो वा स्यात्।

नीडादिषु च ॥ १९३ ॥

एषु अनादौ तिष्ठतो हलो वा द्वित्वम्। दैवं देव्वं देवं दइवं । नीड स्रोत प्रेम व्याहृत जनक यौवन दैव इत्यादयः नीडादिः।

इत् सैन्धवे ॥ १९४ ॥

अत्र एकारस्य इकारः स्यात्। एत्वापवादः। सैन्धवं सिन्धवं।

ईद् धैर्ये ॥ १९५ ॥

अत्र एकारस्य ईत् स्यात्। एत्वापवादः।

तूर्य-धैर्य-सौन्दर्या-ऽऽश्चर्य-पर्यन्तेषु रः ॥ १९६ ॥

एषु र्यस्य रः। धैर्यं धीरं। तूर्यं तूरं। सौन्दर्यं सुन्देरं, 'उत् सौन्दर्यादिषु' (७६) इति उः। आश्चर्यं अच्छेरं, 'श्च-त्स०' (१२५) इति छः। पर्यन्तं पेरंतं । त्रिष्वपि शय्यादित्वाद् एत्वम्। यौवनं जोव्वणं, 'औत ओत्' (७३) इति ओत्, 'आदेर्यो जः' (३९) इति जः, नीडादित्वात् द्वित्वम्, 'नो णः०' (९) इति णः।

आच्च गौरवे ॥ १९७ ॥

गौरवशब्दे आ अउ ओ इत्येते स्युः। गौरवं गारवं गउरवं गोरव इत्यादि। गर्भितं गब्भिणं, 'गर्भिते णः' (८०) इति णः।

डस्य च ॥ १९८ ॥

डकारस्यायुक्तस्य अनादिभूतस्य लः स्यात्। दाडिमं दालिमं। 'प्रायः' इत्यनुवृत्तेः क्वचिद् दाडिमं इत्यपि।

ठो ढः ॥ १९९ ॥

अयुक्तस्य अनादिभूतस्य ठस्य ढः स्यात्। जठरं जढरं। कठोरं कढोरं

अंकोठे ल्लः ॥ २०० ॥

अत्र ठस्य ल्लः स्यात्। अंकोठं अंकोल्लं। सफलं सभलं, 'फो भः' (९१) इति भः। सुखं सुहं, 'ख-ग०' (५९) इति हः। करुणं कलुणं हरिद्रादित्वाद् रेफस्य लः।

श्मश्रु-श्मशानयोरादेः ॥ २०१ ॥

अनयोरादेर्वर्णस्य लोपः स्यात्। श्मशानं मसाणं।

चौर्यसमेषु रिअं ॥ २०२ ॥

एषु र्यस्य रिअं इत्यादेशः स्यात्। चौर्यं चोरिअं। शौर्यं सोरिअं 'औत ओत्' (७३) इति ओत्। वीर्यं वीरिअं।

पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्येषु ल्लः ॥ २०३ ॥

एषु र्यस्य ल्लः स्यात्। पर्यस्तं पल्लत्थं, 'स्तस्य थ' (५७) इति थः 'शेषादेश०' (३५) इति द्वित्वम्। पर्याणं पल्लाणं। सौकुमार्यं सोअमल्लं मुकुटादित्वाद् अः।

पत्तने ॥ २०४ ॥

युक्तस्य टः। पत्तनं पट्टणं। क्षीरं छीरं, अक्ष्यादित्वात् छः। श्लक्ष्णं सण्हं। तीक्ष्णं तिण्हं। 'ह्न-स्न०' (४९) इति ण्हादेशः।

चिह्ने धः ॥ २०५ ॥

युक्तस्य धः स्यात्। ण्हापवादः। चिह्नं चिन्धं, प्रायिकमेतत्, चिण्हं

ष्पस्य फः ॥ २०६ ॥

तालवृन्ते ण्ठः ॥ २०७ ॥

युक्तस्य ण्ठः स्यात्। तालवृन्तकं तालवेण्ठअं तलवेण्ठअं।

आम्र-ताम्रयोर्बः ॥ २०८ ॥

अनयोरनादेः बः स्यात्। आम्रं अंबं। ताम्रं तंबं। क्लिष्टं किलिट्ठं। रत्नं रअणं। 'क्लिष्ट-श्लिष्ट०' (१७१) इति विप्रकर्षः तत्स्वरता च।

उदुम्बरे दोर्लोपः ॥ २०९ ॥

अत्र दु इत्यस्य लोपः स्यात्। उदुम्बरं उंबरं।

कालायसे यस्य वा ॥ २१० ॥

अत्र यस्य वा लोपः स्यात्। य इति विशिष्टग्रहणम्। कालायसं कालासं कालाअसं, लोपाभावपक्षे 'क-ग०' (१०) इति यकारमात्रलोपः।

मलिने लिनोरिलौ वा ॥ २११ ॥

मलिनशब्दे लि इत्यस्य इः स्यात्, न इत्यस्य लः स्याद् वा। मलिनं मइलं मलिणं।

गृहे घरोऽपतौ ॥ २१२ ॥

गृहशब्दस्य घर इत्ययमादेशः स्यात्, न तु पतौ परे। गृहं घरं। अपताविति किम्? गृहपतिः गहवई। पीतं पीअं। धनं धणं।

वृन्दे वो रः ॥ २१३ ॥

वृन्दशब्दे वात् परः स्वार्थे रो वा स्यात्। व्रंदं वंदं।

आलाने न-लोः ॥ २१४ ॥

अत्र नकार-लकारयोः स्थितिपरिवृत्तिः स्यात्। आलानं आणालं।

दाढादयो बहुलम् ॥ २१५ ॥

दाढा इत्यादयः शब्दाः बहुलं निपात्यन्ते। चातुर्यं चाउलिअं। पृष्ठं पुट्ठं। इदानीं एण्हिं। दुहिता दिद्धी। मण्डूकः मण्डूरो। कमलं कंदोट्टो। गोदावरी गोला। ललाटं लडालं णिडालं। आकृतिगणोऽयम्। 'सु-भिसु०' (१३८) इति दीर्घे प्राप्ते—

न नपुंसके ॥ २१६ ॥

क्लीबे प्रथमैकवचने दीर्घो न। वारि वारिं। वारीणि वारीइं। पुनस्तद्वत्। शेषं पुंवत्।

युक्तस्य ठः स्यात्। अस्थि अट्ठिं। सक्थि सत्थिं। अक्षि अच्छि
गुरु गरुअं, मुकुटादित्वाद् अः। श्मश्रुः मंसू, 'श्मश्रु-श्मशानयोः०'
(२०१) इति शकारलोपः अश्रु अंसू, वक्रादित्वाद् अनुस्वारः। मधु महुं

॥ इत्यजन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

*

अनड्वान् अणडुओ, विष्णुवत्। चतुर्शब्दो नित्यं बहुवचनान्तः

चतुरश्चत्तारो चत्तारि ॥ २१८ ॥

चतुःशब्दस्य जसा शसा च सह एतावादेशौ स्याताम्। चत्वारः
चत्तारो चत्तारि। चतुरः चत्तारो चत्तारि। चतुर्भिः चऊहिं। चतुर्भ्यः
चऊहिंतो चऊसुत्तो। चतुर्णां चउण्हं। चतुर्षु चऊसु।

किमः कः ॥ २१९ ॥

स्पष्टम्। कः को। के के, 'सर्वादेः०' (१३५) इति एत्वम्।

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यष्टा इणा वा ॥ २२० ॥

एभ्यः परः टा इणा इति वा स्यात्। केन कइणा केण।

त्तो दो ङसेः ॥ २२१ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो ङसेः त्तो दो इत्येतावादेशौ वा स्याताम्। कस्मात्
कत्तो कदो का कादो कादु काहि। केभ्यः काहिंतो कासुत्तो।

किं-यत्-तद्भ्यो ङस आसः ॥ २२२ ॥

एभ्यः परस्य ङस आस इत्यादेशो वा स्यात्। कस्य कास कस्स।

आम एसिं ॥ २२३ ॥

इदम्-एतत्-किं-यत्-तद्भ्यः परस्य आम एसिं इत्यादेशो वा स्यात्।
केषां केसिं काणं।

ङेर्हिं ॥ २२४ ॥

किं-यत्-तद्भ्यो ङेः सप्तम्येकवचनस्य हिं इत्यादेशो वा स्यात्।
कस्मिन् कहिं कस्सिं कम्मि कत्थ।

आहे इआ काले ॥ २२५ ॥

किं-यत्-तद्भ्यः परस्य ङेः काले वाच्ये आहे इआ इत्येतावादेशौ वा
स्याताम्। कदा काहे कइआ कहिं कस्सिं कम्मि कत्थ। केषु केसु।

इदम इमः ॥ २२६ ॥

इदम्शब्दस्य इम इत्यादेशः स्यात् सुपि। अयं इमो। इमे इमे। इमं इमं। इमान् इमा। अनेन इमेण इमिणा, 'इदमेतत्०' (२२०) इति इणादेशः। एभिः इमेहिं। अस्मात् इमादो इमादु इमाहि। एभ्यः इमाहिंतो इमासुत्तो।

स्स-स्सिमोरद् वा ॥ २२७ ॥

इदम्शब्दस्य अ इत्यादेशो वा स्यात् स्से स्सिमि च। अस्य अस्स इमस्स। एषां इमेसिं इमाणं।

ङेदन हः ॥ २२८ ॥

इदम्शब्दस्य दकारेण ङेः ह इत्यादेशो वा स्यात्। पक्षे यथाप्राप्तम्।

न त्थः ॥ २२९ ॥

इदमः परस्य ङेः त्थ इत्यादेशो न स्यात्। अस्मिन् अस्सिं इमस्सिं इह इमम्मि। एषु इमेसु।

राज्ञश्च ॥ २३० ॥

राजन्शब्दस्य आ इत्ययमादेशः स्यात् सौ। राजा राआ, 'अन्त्यस्य०' (२६) इति सोर्लोपः।

जस्-शस्-ङसो णो ॥ २३१ ॥

राज्ञः परेषामेषां णो इत्यादेशः स्यात्।

आ णो-णमोरङसि ॥ २३२ ॥

णो-णमोः परयोः राज्ञो जस्य आ स्यात्। राजानः राआणो।

आमन्त्रणे वा बिन्दुः ॥ २३३ ॥

राजन्शब्दस्यामन्त्रणेऽनुस्वारो वा स्यात् सौ। हे राजन् हे राअं हे राअ। राजानं राअं। 'शेषो०' (१३७) इति अदन्तवद्भावः।

शस एत् ॥ २३४ ॥

राज्ञः परस्य श ए इत्यादेशः स्यात्। राज्ञः राए राआणो।

ङसश्च द्वित्वं वाऽन्त्यलोपश्च ॥ २३६ ॥

राज्ञः परस्य ङसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वं वा स्यात् अन्त्यस्य च लोपः। राज्ञा रण्णा। पक्षे –

इदद्वित्वे ॥ २३७ ॥

ङसादेशस्य टादेशस्य च द्वित्वाभावपक्षे राज्ञ इत्वं स्यात्। राइणा। राजभिः राएहिं 'शेषो०' (१३७) इत्यदन्तवद्भावः। राज्ञः राआ राआदो राआदु राआहि। राजभ्यः राआहिंतो राआसुन्तो। राज्ञः रण्णो राइणो।

आमो णं ॥ २३८ ॥

राज्ञ उत्तरस्य आमः णं इत्यादेशः स्यात्। राज्ञां राआणं। राज्ञि राअम्मि राए। राजसु राएसु।

आत्मनो अप्पाणो वा ॥ २३९ ॥

आत्मनः अप्पाण इत्ययमादेशो वा स्यात्।

इत्व-द्वित्ववर्जं राजवदनादेशे ॥ २४० ॥

आत्मनः अनादेशे राजवत् कार्यं स्यात्, [इत्व-द्वित्वे वर्जयित्वा] आत्मा अप्पाणो अप्पा। 'राज्ञश्च' (२३०) इति आकार उक्तः सोऽत्रापि स्यात्। आत्मनः अप्पाणो। आत्मानं अप्पं। आत्मनः अप्पणो। आत्मना अप्पणा। आत्मभिः अप्पेहिं। आत्मनः अप्पा अप्पादो अप्पादु अप्पाहि। आत्मभ्यः अप्पाहिंतो अप्पासुन्तो। आत्मनः अप्पणो। आत्मनां अप्पाणं। आत्मभिः (°त्मनि?) अप्पे अप्पम्मि। आत्मसु अप्पेसु।

ब्रह्माद्या आत्मवत् ॥ २४१ ॥

ब्रह्मन् युवन् इत्यादयः शब्दाः आत्मवत् साधवः स्युः। ब्रह्म बह्म। बह्माणो। युवा जुवा जुवाणो। अध्वा अद्धा अद्धाणो। एवमादयो लक्ष्यानुसारतो ज्ञेयाः।

न-सान्त-प्रावृट्-शरदः पुंसि ॥ २४२ ॥

नश्च सश्च न-सौ अन्ते यस्य इति विग्रहः। एते पुंसि प्रयोक्तव्याः

अनयोर्यः तकारः तस्य सकारः स्यात् सौ। सः सो। ते ते। तं तं। तान् ता। तेन तइणा तेण। तैः तेहिं।

तद ओश्च ॥ २४४ ॥

तदः परस्य ङसेः ओ इत्ययमादेशो वा स्यात्। तस्मात् तओ तत्तो तदो तादो तादु ताहि। तेभ्यः ताहिंतो तासुत्तो।

ङसा से ॥ २४५ ॥

तदो ङसा सह से इत्यादेशो वा स्यात्। तस्य से तास तस्स।

आमि सिं ॥ २४६ ॥

तद आमा सह सिं इत्यादेशो वा स्यात्। तेषां सिं तेसिं ताणं। तस्मिन् तहिं तस्सिं तम्मि तत्थ। तदा तहे तइआ। तेषु तेसु। एवं यः जो।

एतदः सावोत्वं वा ॥ २४७ ॥

एतद ओत्वं वा स्यात् सौ। एषः एसो एस, नित्यप्राप्तविभाषेयम्। एते एते। एतं एतं। एतान् एता। एतेन एदिणा एदेण। एतैः एदेहिं।

त्तो ङसेः ॥ २४८ ॥

एतदः परस्य ङसेः त्तो इत्ययमादेशो वा स्यात्।

त्तो-त्थयोस्तो लोपः ॥ २४९ ॥

एतच्छब्दस्य तकारस्य लोपः स्यात् त्तो-त्थयोः परयोः। एतस्मात् एत्तो एदादो एदादु एदाहि। एतस्मिन् एत्थ एतस्सिं एतम्मि।

पदस्य ॥ २५० ॥

—इत्यधिकृत्य।

युष्मदस्तं तुमं ॥ २५१ ॥

युष्मदः पदस्य तं तुमं इत्यादेशौ स्यातां सावा सह। त्वं तं तुमं।

तुज्झे तुम्हे जसि ॥ २५२ ॥

युष्मदः पदस्य तुज्झे तुम्हे इत्येतावादेशौ वा स्तः जसा सह। यूयं तुज्झे तुम्हे।

त्तं वाऽमि ॥ २५३ ॥

युष्मदः पदस्य त्तं इत्यादेशो वा स्यात् अमा सह। त्वाम् त्तं तुमं।

युष्मदः पदस्य वो तुज्झे तुम्हे इत्येते आदेशाः स्युः शसा सह।
युष्मान् वो तुज्झे तुम्हे ॥

टा-ङ्योस्तइ तए तुमए तुए ॥ २५५ ॥

युष्मदुत्तरयोः टा ङि इत्येतयोः तइ तए तुमए तुए इत्येते आदेशाः
स्युः प्रकृत्या सह। त्वया तइ तए तुमए तुए।

आङि च ते दे ॥ २५६ ॥

युष्मदः पदस्य आङा सह ते दे इत्येतावादेशौ स्तः। आङ् इति
टासंज्ञा प्राचाम्।

तुमाइ च ॥ २५७ ॥

अयमपि स्यात्। ते दे तुमाइ।

तुज्झेहिं तुम्हेहिं तुब्भेहिं भिसि ॥ २५८ ॥

युष्मदः पदस्य एते आदेशाः स्युः भिसा सह। युष्माभिः तुज्झेहिं
तुम्हेहिं तुब्भेहिं। अत्र 'तुज्झे तुम्हे तुब्भे' इति सुवचम् 'शिषो०
(१३७) इत्यनेन 'भिसो हिं' (१७) इति हिमादेशस्यातिदिष्टत्वात्।

ङसौ तत्तो तइत्तो तुमादो तुमादु तुमाहि ॥ २५९ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः ङस्या सह। त्वत् तत्तो तइत्तो तुमादो
तुमादु तुमाहि।

तुम्हाहिंतो तुम्हासुत्तो भ्यसि ॥ २६० ॥

युष्मद एतौ आदेशौ स्यातां पञ्चमीबहुवचनेन सह। युष्मत्
तुम्हाहिंतो तुम्हासुत्तो। अत्रापि 'तुम्हा भ्यसि' इत्येव सुवचम्। एवम
[स्मत्]शब्देऽपि ज्ञेयम्।

ङसि तुमो-तुह-तुज्झ-तुम्ह-तुब्भाः ॥ २६१ ॥

युष्मद एते आदेशाः स्युः ङसा सह। तव तुमो तुह तुज्झ तुम्ह
तुब्भ।

वो भे तुज्झाणं तुम्हाणमामि ॥ २६२ ॥

युष्मद एते स्युरामा सह। युष्माकम् वो भे तुज्झाणं तुम्हाणं।

ङौ तुमम्मि ॥ २६३ ॥

युष्मदः तुमम्मि इत्यादेशः स्यात् ङ्या सह। त्वयि तुमम्मि तइ तए तुमए तुए।

तुज्झेसु तुम्हेसु सुपि ॥ २६४ ॥

युष्मद एतौ स्यातां सुपा सह। युष्मासु तुज्झेसु तुम्हेसु।

अस्मदो हमहमहअं सौ ॥ २६५ ॥

अस्मद एते स्युः प्रथमैकवचनेन सह। अहम् हं अहं अहअं।

अहम्मिरम्मि च ॥ २६६ ॥

अस्मदः प्रथमैकवचन-द्वितीयैकवचनाभ्यां सह आदेशः स्यात्। अहं अहम्मि।

अम्हे जस्-शसोः ॥ २६७ ॥

अस्मदः अयमादेशः स्याद् जसा शसा च सह। वयं अम्हे।

मं ममं ॥ २६८ ॥

अस्मद एतावादेशौ स्याताम्। माम् अहम्मि मं ममं। 'अहम्मिरम्मि च' (२६६) इत्यतो 'अम्मि' इत्यनुवर्त्तते। 'चानुकृष्टं नोत्तरत्र' इति परिभाषया चानुकृष्टानां हं-आदीनां नानुवर्तनम्।

णे शसि ॥ २६९ ॥

अस्मदो णे इत्यादेशः स्यात् शसा सह। अस्मान् अम्हे णे।

आङि मे ममाइ ॥ २७० ॥

अस्मदः एतौ स्तः टया सह। मया मे ममाइ।

ङौ च मइ मए ॥ २७१ ॥

अस्मदः एतौ स्तः ङि-टाभ्यां सह। मया मइ मए।

अम्हेहिं भिसि ॥ २७२ ॥

अस्मदः अयं स्याद् भिसा सह। अस्माभिः अम्हेहिं।

मत्तो मइत्तो ममादो ममादु ममाहि ङसौ ॥ २७३ ॥

अम्हेहिंतो अम्हेसुन्तो भ्यसि ॥ २७४ ॥

असद एतौ स्यातां भ्यसा सह। अस्मत् अम्हेहिंतो अम्हेसुन्तो।

मे मम मह मज्झ ङसि ॥ २७५ ॥

असद एते स्युः ङसा सह । मम मे मम मह मज्झ । झस्य धत्वमपीच्छन्ति केचित्, मद्ध।

मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे आमि ॥ २७६ ॥

असद एते स्युरामा सह। अस्माकम् मज्झणो अम्हं अम्हाणं अम्हे।

ममम्मि ङौ ॥ २७७ ॥

असदः अयं स्याद् ङ्या सह। मयि ममम्मि मइ मए।

अम्हेसु सुपि ॥ २७८ ॥

असदः अयं स्यात् सुपा सह। अस्मासु अम्हेसु।

शरदो दः ॥ २७९ ॥

अत्रान्त्यहलो दः स्यात्। लोपापवादः। शरत् सरदो, 'नसान्त०' (२४२) इति पुंवद्भावः।

दिक्-प्रावृषोः सः ॥ २८० ॥

अनयोरन्त्यस्य सः स्यात्। लोपापवादः। प्रावृट् पाउसो। रत्नमुद्रअणमु।

अदसो दो मुः ॥ २८१ ॥

अदसो दकारस्य मु इत्यादेशः स्यात् सुपि।

हश्च सौ ॥ २८२ ॥

अदसो दस्य हः स्यात् सौ। असौ अह अमू। हादेशोऽयं ओत्व-आत्व-बिन्दून् परत्वाद् बाधते। अमी अमुए अमुणो। अमुम् अमुं। अमून् अमूओ। अमुना अमुणा। अमीभिः अमूहिं। अमुष्मात् अमूदो अमूदु अमूहि। अमीभ्यः अमूहिंतो अमूसुन्तो। अमुष्य अमुस्स। अमीषाम् अमुणं। अमुष्मिन् अमुस्सि अमुम्मि अमुत्थ। अमीषु अमूसु। तपः तवो। यशः जसो। सरः सरो।

॥ इति हलन्ताः पुंलिङ्गाः ॥

रो रा ॥ २८४ ॥

स्त्रियामन्त्यस्य रेफस्य रा इत्ययमादेशः स्यात्। धूः धुरा। गीः गिरा। चतस्रः चत्तारो चत्तारि। का काआ की।

इद्भ्यः स्सा-से ॥ २८५ ॥

इकारान्तेभ्यः किं-यत्-तद्भ्यो ङसः स्सा से इत्येतावादेशौ वा स्याताम्। कस्याः किस्सा कीसे। पक्षे कीइ कीए कीअ कीआ, 'टाङस्०' (१६०) इति आदेशाः। 'आदीतौ०' (१७४) इति आकारपक्षे काइ काए। इयं इमा। युष्मदस्मदोर्लिङ्गत्रये सदृशं रूपम्। या जा जी। याः जाउ जाओ जा। यस्याः जिस्सा जीसे जीइ जीए जीअ जीआ जाइ जाए। वाक् वाआ।

न विद्युति ॥ २८६ ॥

अन्त्यस्य हल आकारो न स्यात्। विद्युत् विज्जू। दिक् दिसा, 'दिक्प्रावृषोः०' (२८०) इति सः। असौ दिक् अमू दिसा। अमूः अओ। मुशेषमूकारस्त्रीलिङ्गवत्।

॥ इति हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

*

नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो ॥ २८७ ॥

क्लीबे सविभक्तिकस्येदमः इदं इणं इणमो इत्यादेशाः स्युः स्वमोः परयोः। इदम् इदं इणं इणमो। इमानि इमाइं। पुनस्तद्वत्। शेषं पुंवत्। किम् किं। कानि काइं। पुनरपि। शेषं पुंवत्। तत् तं, '०अनपुंसके' (२४३) इत्युक्ते न सादेशः। तानि ताइं। एतत् एदं। यत् जं। यानि जाइं। अदः अह अमुं। अमूनि अमूइं। 'न सान्त०' (२४२) इति प्राप्ते–

न शिरो-नभसी ॥ २८८ ॥

एतौ पुंसि न स्याताम्। शिरः सिरं, 'अन्त्यस्य०' (   ) इति सोर्लोपः।

॥ इति हलन्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

*

अधिकारोऽयम्।

हुं दान-पृच्छा-निर्धारणे ॥ २९० ॥

हुमित्ययं निपातसंज्ञः स्याद् दाने पृच्छायां निर्धारणे च।

चिअ चेअ अवधारणे ॥ २९१ ॥

चिअ चेअ इत्येतौ निपातसंज्ञौ स्तः निश्चये।

ओ सूचना-पश्चात्ताप-विकल्पेषु ॥ २९२ ॥

ओ इत्ययं निपातः सूचनायां पश्चात्तापे विकल्पे च।

इर-किर-किला अनिश्चिताख्याने ॥ २९३ ॥

त्रयो निपाताः संशयाख्याने।

हु-क्खु निश्चय-वितर्क-सम्भावनेषु ॥ २९४ ॥

हु क्खु इत्येतौ निपातौ निश्चये वितर्के सम्भावनायां च।

णवरः केवले ॥ २९५ ॥

निपातः केवलेऽर्थे।

णवरि आनन्तर्ये ॥ २९६ ॥

णवरि इति आनन्तर्ये निपातः।

किणो प्रश्ने ॥ २९७ ॥

किणो इत्ययं पृच्छायां निपातः।

अव्वो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु ॥ २९८ ॥

अव्वो इत्ययं निपातः दुःखे सूचनायां सम्भावनायां च।

अलाहि निवारणे ॥ २९९ ॥

अलाहि इत्ययं निपातः निषेधे।

अइ वले सम्भाषणे ॥ ३०० ॥

अइ वले एतौ निपातौ वचने।

अव्वो अम्मो दुःखा-ऽऽक्षेप-विस्मापनेषु ॥ ३०१ ॥

एतौ निपातौ दुःखे आक्षेपे विस्मापने च। अत्र 'अव्वो दुःख-सूचना-सम्भावनेषु' 'अम्मो च दुःखाऽऽक्षेप-विस्मापनेषु' इति सूत्रयितुं युक्तमिति केचित्। वयं तु तत्रापरसूत्रे 'दुःख' शब्दमपि त्यजामः, पूर्वसूत्रे दुःखशब्दस्य स्वरितत्वेनानुवर्त्तनात्, 'स्वरितेनाधिकारः' इति पाणिनीये

परिभाषितत्वात् समस्तपदादेकदेशानुवृत्तिस्तु 'क्ङिति च' इत्यत्र 'न
धातुलोपः'–इत्यतो धातुग्रहणानुवृत्तिवत्।

णवि वैपरीत्ये ॥ ३०२ ॥

अयं वैपरीत्ये निपातः।

सू कुत्सायाम् ॥ ३०३ ॥

सू इत्ययं निपातो निन्दायाम्।

रे अरे हिरे सम्भाषण-रतिकलहा-ऽऽक्षेपेषु ॥ ३०४ ॥

रे अरे हिरे इति त्रयः क्रमेण सम्भाषणे रतिकलहे आक्षेपे च निपाताः। अत्र च 'यथासंख्यमनुदेशः समानाम्' इत्युक्तत्वाद् यथासंख्यम्।

म्मिव-मिअ-विआ इवार्थे ॥ ३०५ ॥

म्मिव मिअ विअ इत्येते इवार्थे निपातसंज्ञकाः।

अज्ज आमन्त्रणे ॥ ३०६ ॥

अज्ज इत्ययं निपातः आमन्त्रणेऽर्थे, सम्बोधने इत्यर्थः।

शेषः संस्कृतात् ॥ ३०७ ॥

उक्तादन्यः संस्कृतादवगन्तव्यः।

इवे व्वः ॥ ३०८ ॥

इवशब्दे व्व इति निपात्यते। स इवायम् सो व्व इमो। विअ इति वक्तव्यम्, सो विअ इमो।

अपौ व्विः ॥ ३०९ ॥

अपिशब्दे व्विः इति निपात्यते। सोऽपि देव इव सो व्वि देवो व्व।

ओदवा-ऽपयोः ॥ ३१० ॥

अव अप इत्येतयोः ओ इत्यादेशो वा स्यात्। अवगाहः ओगाहो अवगाहो। अपनयः ओणओ अवणओ, 'पो वः' (८९) इति वः।

इतेस्तः पदादेः ॥ ३११ ॥

पदादेः इतिशब्दस्य यः तकारः ततः परस्य इकारस्य अ इत्यादेशः स्यात्। इति विलपन् इअ विलअंतो। त इति किम्? आदेरिकारस्य मा भूत्। पदादेरिति किम्? इलेलिरिति वक्तव्यम् (?)। पिय इति इमवि

कृञ्परो यो द्विधाशब्दः तस्य आदेः इकारस्य ओकारः स्याद् उश्च द्विधाकृतम् दोहाइअं दुहाइअं। एवम् एअं एवं, एव एअ एव, यावदादित्वाद् वा वलोपः।

तल्-त्वयोर्दा-त्तणौ ॥ ३१३ ॥

पाणिनीये भावार्थे [यौ] तल्-त्वौ विहितौ तयोः क्रमेण दा त्तण इत्येतावादेशौ स्याताम्। कृष्णता कण्हदा, 'तलन्तं स्त्रियाम्' ( ) इति लिङ्गानुशासनबलात् स्त्रीत्वम्। कृष्णत्वम् कण्हत्तणं, 'त्वान्तं क्लीवम्' ( ) इति षण्ढत्वम्।

आल्विल्लोल्लालवत्तेत्ता मतुपः ॥ ३१४ ॥

तदस्यास्त्यस्मिन्नित्यर्थे विहितो मतुप् तस्य आलु इल्ल उल्ल आल वत्त इत्त इति षडादेशाः स्युः। निद्रावान् णिद्दालू। मालावान् मालाइल्लो विकारवत् विआरुल्लं। धनवान् धणालो। गुणवान् गुणवत्तो। मानवान् माणइत्तो, 'सन्धावचा०' (१)।

विद्युत्-पीताभ्यां वा लः ॥ ३१५ ॥

आभ्यां लप्रत्ययः स्यात्। विद्युत् विज्जुली, विद्युच्छब्दस्य स्त्रीलिङ्गत्वात् स्त्रीत्वम्, पक्षे विज्जू। पीतं पीअलं पीअं।

॥ इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरव-
विरचिते प्राकृतानन्दे प्रथमः परिच्छेदः ॥ १ ॥

*

[अथ द्वितीयः परिच्छेदः ।]

भू सत्तायाम्।

भुवो हो-हुवौ ॥ ३१६ ॥

भूधातोः हो हुव इत्येतावादेशौ स्याताम् ।

ते-तिपोरिदेतौ ॥ ३१७ ॥

धातोः परयोः ते तिप् इत्येतयोरिदेतौ स्याताम्। यथासंख्यं नेष्यते ।

अत ए से ॥ ३१८ ॥

नियमार्थं वचनम्। त-तिपोः सिप्-थासोर्यौ ए से इत्येतावादेशौ विहितौ तावकारान्तादेव स्याताम्, नान्यस्मात्।

लादेशे वा ॥ ३१९ ॥

लकारादेशे परे अत एत्वं वा स्यात्। भवति = होइ हुवइ हुवए हुवेइ हुवेए ।

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्ज्ज ज्जा वा ॥ ३२० ॥

वर्त्तमाने भविष्यदनद्यतने च विध्यादिषु चोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य ज्ज ज्जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम्। होज्ज होज्जा। लि-लो-लुट्-लङः विध्यादयः।

मध्ये च ॥ ३२१ ॥

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु च धातु-प्रत्यययोर्मध्ये ज्ज ज्जा इत्येतावादेशौ वा स्याताम्। भवति = होज्जइ होज्जेइ होज्जाइ, पक्षे पूर्वमुक्तम्।

नानेकाचः ॥ ३२२ ॥

वर्त्तमान-भविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु चानेकाचो धातोः परतो मध्ये ज्ज ज्जा इत्येतावादेशौ न स्याताम्। भवति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा। एवमग्रेऽपि पूर्वोक्तलेषु प्रथम-द्वितीय-तृतीयेषु पुरुषेषु एकवचन-द्विचचन-बहुवचनादावप्यवगन्तव्यम्।

न्ति-हेत्था-मो-मु-मा बहुषु ॥ ३२३ ॥

तिङो बहुवचनानामेते आदेशाः स्युः। प्रथमपुरुषबहुवचनस्य न्ति, मध्यमस्य ह इत्था एतौ, उत्तमस्य मो मु म एते इति विवेकः। भवतः भवन्ति = होन्ति हुवन्ति हुवेन्ति हुवज्ज हुवेज्ज हुवज्जा हुवेज्जा होज्ज होज्जा

थास्-सिपोः सि से ॥ ३२४ ॥

धातोः परयोः थास्-सिपोः सि से इत्येतावादेशौ स्याताम्। यथासंख्यं न। भवसि = होसि हुवसि हुवेसि हुवसे हुवेसे। भवथः भवथ— होह होइत्था हुवह हुवेह हुवइत्था हुवेइत्था हुवित्था, 'सन्धा०' (१) इत्यकारलोपो वा।

इट्-मयोर्मिः ॥ ३२५ ॥

इट् मि इत्येतयोः मिः स्यात्।

अत आ मिपि वा ॥ ३२६ ॥

अकारस्य आकारो वा स्याद् मिपि परे। भवामि = होमि हुवामि हुवेमि हुवमि।

इच्च बहुषु ॥ ३२७ ॥

मिपो बहुवचने परे अत इः स्याद् आ च। भवावः भवामः = होमो होमु होम हुवामो हुविमो हुवेमो हुवमो हुवामु हुविमु हुवेमु हुवमु हुवाम हुविम हुवेम हुवम। इति लट्। अथ लिट्—

ईअ भूते ॥ ३२८ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य ईअ इत्यादेशः स्यात्। बभूव= हुवीअ।

इअं भूते ॥ ३२९ ॥

भूते काले धातोः परस्य प्रत्ययस्य इअं इत्यादेशः स्यात्। बभूव हुविअं।

एकाचो हीअ ॥ ३३० ॥

भूते काले एकाचो धातोः परस्य प्रत्ययस्य हीअ इत्यादेशः स्यात् बभूव = होहीअ। त्रीण्यपि रूपाणि प्रथम-मध्यमोत्तमैकवचन-द्विवचन बहुवचनेष्ववगन्तव्यानि।

उ सु मु विध्यादिष्वेकस्मिन् ॥ ३३१ ॥

विध्यादेरेकवचनस्य क्रमेण उ सु मु इत्येते आदेशाः स्युः। बभूव= होउ हुवेउ हुवउ।

न्तु ह मो बहुषु ॥ ३३२ ॥

विध्यादेर्बहुवचनस्य क्रमेण न्तु ह मो इत्येते आदेशाः स्युः। बभूवुः= होन्तु हुवेन्तु हुवन्तु। बभूविथ = होस हुवेस हुवस = बभूव = होह हुवेह

हुवह, हविधानं इत्थ(त्था)बाधनार्थम्। बभूव-होमु हुवमु हुवमु। बभूविम=होमो हुवेमो हुवमो। मोविधानं मु-मयोर्बाधार्थम्। इति लिट्। अथ लुट्-

धातोर्भविष्यति हिः ॥ ३३३ ॥

भविष्यति काले धातोः परे हिः स्यात्। भविता=होहिइ हुवेहिइ हुवहिइ।

एच्च क्त्वा-तुमन्-तव्य-भविष्यत्सु ॥ ३३४ ॥

एषु अत एत्वं स्यात्, चादिश्च। हुविहिइ हुवेहिए हुवहिए हुविहिए होज्ज होज्जा हुवेज्ज हुवज्ज हुवज्जा होज्जाहिइ होज्जेहिइ होज्जाहिइ होउ हुवेउ हुवउ। भवितारः=होहिंति हुवेहिंति हुविहिंति हुवहिंति होन्तु हुवेन्तु हुवन्तु। भवितासि=होहिसि हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे होसु हुवेसु हुवसु। भवितास्थ=होहिह हुवेहिह हुवहिह होह हुवेह हुवह।

उत्तमे स्सा हा च ॥ ३३५ ॥

भविष्यत्युत्तमे परे धातोः परौ स्सा हा इत्येतौ स्याताम्। चात् हिः।

मिना स्सं वा ॥ ३३६ ॥

भविष्यति मिना सह धातोः परः स्सं वा स्यात्। भविष्यामि=होस्सामि हुवेस्सामि हुवस्सामि होहामि हुवेहामि हुवहामि हुवाहामि होहिमि हुवेहिमि हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं होमु हुवेमु हुवामु हुवमु।

मो-मु-मैर्हि-स्सा-हित्था ॥ ३३७ ॥

भविष्यति मो-मु-मैः सह हिस्सा हित्था इत्येतावादेशौ वा स्याताम्। भवितास्मः=होहिस्सा हुवेहिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था हुवेहित्था हुविहित्था हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो हुवस्सामो होहामो हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो हुवेहिमो हुविहिमो हुवाहिमो हुवहिमो होमो हुवेमो हुविमो हुवामो हुवमो। इति लुट्।

अथ लृट्। भविष्यति=होहिइ हुवेहिइ हुवहिय हुवेहिए हुवहिए। भविष्यन्ति=होहिन्ति हुवेहिन्ति हुवहिन्ति। भविष्यसि=होहिसि हुवेहिसि हुवहिसि हुवेहिसे हुवहिसे। भविष्यथ=होहिह हुवेहिह-हुवहिह होहित्थ हुवइत्थ हुवित्थ। भविष्यामि=होस्सामि हुवेस्सामि

हुवाहिमि हुवहिमि होस्सं हुवेस्सं हुवस्सं। भविष्यामः = होहिस्सा हुवेहिस्सा हुविहिस्सा हुवाहिस्सा हुवहिस्सा होहित्था हुवेहित्था हुविहित्था हुवाहित्था हुवहित्था होस्सामो हुवेस्सामो हुविस्सामो हुवस्सामो होहामो हुवेहामो हुविहामो हुवाहामो हुवहामो होहिमो हुवेहिमो हुविहिमो हुवाहिमो हुवहिमो होस्सामु हुवेस्सामु हुविस्सामु हुवस्सामु होहामु हुवेहामु हुविहामु हुवाहामु हुवहामु होहिमु हुवेहिमु हुविहिमु हुवाहिमु हुवहिमु होस्साम हुवेस्साम हुविस्साम हुवस्साम होहाम हुवेहाम हुविहाम हुवाहाम हुवहाम होहिम हुवेहिम हुविहिम हुवाहिम हुवहिम। इति लट्।

अथ लोट्—भवतु = होउ हुवेउ हुवउ। भवन्तु = होंतु हुवेन्तु हुवन्तु। भव = होसु हुवेसु हुवसु। भवत = होह हुवेह हुवह। भवानि = होमु हुवेमु हुवामु हुवमु। भवाम = होमो हुवेमो हुवामो हुविमो हुवमो। इति लोट्। लोट्वद् लङ्-लिङाशीर्लिङः।

अथ लुङ्—अभूत् = हुवीअ हुविअं होहीअ, एवं पुरुष—वचनेषु। लृङ् लट्वत्।

प्रादेर्भवः ॥ ३३८ ॥

प्रादेः परस्य भुवो भव इत्यादेशः स्यात्। प्रभवति = पभवइ पभवए पभवेइ पभवेए। उद्भवति उब्भवइ। प्रतिभवइ पडिभवइ, 'प्रतिसर०' (३३) इति तस्य डः। खाद भक्षणे।

खादि-धाव्योः खा-धौ ॥ ३३९ ॥

अनयोः खा धा इत्येतौ क्रमेण स्यातां वर्त्तमाने भविष्यति विध्यादीनामेकवचनेषु च। खादति खाइ। चखाद खाहीअ। खादिता खाहिइ खादिष्यति खाहिइ। खादतु खाउ। एवं लङ्-लिङाशीर्लिङः। अखादीत् खादीअं खादीअ। लृङ् लङ्वत्।

क्षियो झिज्जः ॥ ३४० ॥

'क्षि क्षये' अस्य झिज्ज इत्यादेशः स्यात्। क्षयति झिज्जइ झिज्जए छिज्ज-भिज्जावप्येके। व्रज गतौ।

च्चो व्रज-नृत्योः ॥ ३४१ ॥

अनयोरन्तस्य च्चः स्यात्। व्रजति वच्चइ वच्चेइ वच्चए। व्रजिता वच

वेष्टेश्च ॥ ३४२ ॥

अन्तस्य ढः स्यात् । ठापवादः । वेष्टते वेढइ वेढए वेढेइ वेढेए । 'क्थेर्ढः' (३५८) इति पूर्वसूत्रान्तर्गतं न कृतम्, 'उत्समोर्ल्लः' (३४३) इत्युत्तरसूत्रेऽनुवृत्त्यर्थम्, अन्यथा क्थिरपि ल्लविधानेऽनुवर्त्तेत ।

उत्समोर्ल्लः ॥ ३४३ ॥

एतयोः परस्य वेष्टेरन्तस्य ल्लः स्यात् । उद्वेष्टते उव्वेल्लइ । संवेष्टते संविल्लइ । स्फुट विकसने ।

स्फुटि-चल्योर्वा ॥ ३४४ ॥

अनयोरन्तस्य द्वित्वं वा स्यात् । स्फोटते फुट्टइ फुटइ, भौवादिक-तौदादिकौ गृह्येते स्फुटि-चली इह । पट गतौ ।

पटेः फलः ॥ ३४५ ॥

स्पष्टम् । पटति फलइ । जृभि गात्रविनामे ।

जृभो जंभाअ ॥ ३४६ ॥

जृभि इत्यस्य जंभाअ इत्यादेशः स्यात् । जृम्भते = जंभाअइ जंभाएइ जंभाअए जंभाएए । जृम्भिता = जंभाअहिइ जंभाएहिइ जंभाअहिए जंभाएहिए । जल्प व्यक्तायां वाचि ।

जल्पेर्लो मः ॥ ३४७ ॥

जल्पेर्लस्य मः स्यात् । जल्पति जंपइ । घुण भ्रमणे ।

घुणो घोलः ॥ ३४८ ॥

घुणेर्घोल इत्यादेशः स्यात् । घूर्णति घोलइ घोलए, भ्वादि तुदादि । मील निमेषणे ।

प्रादेर्मीलः ॥ ३४९ ॥

प्रादेः परस्य मीलो लस्य द्वित्वं वा स्यात् । प्रमीलति = पमिल्लइ पमीलइ पमिल्लए पमीलए पमिल्लेइ पमीलेइ पमील्लेए पमीलेए । जि जये ।

श्रु-हु-जि-लू-धुवां ण्णोऽन्त्ये ह्रस्वः ॥ ३५० ॥

एषामन्त्ये ण्णः स्यात्, दीर्घस्य ह्रस्वश्च स्यात् । जयति जिण्णइ । जिगाय जिण्णीअ ।

धावु गति-शुद्ध्योः । धावति धावते धाइ । दधाव दधावे धाहीअ । धाविता धाहिइ । धावतु धावतां धाउ ।

काशोवासः ॥ ३५१ ॥

अवात् परस्य काशोर्वास इत्यादेशः स्यात् । अवकासते ओवासइ । अवादिति किम् ? कासते कासइ । ग्रसु ग्लसु अदने ।

ग्रसेर्विसः ॥ ३५२ ॥

अस्य विस इत्यादेशः स्यात् । ग्रसते विसइ । गाहू विलोडने ।

अवाद् गाहेर्वाहः ॥ ३५३ ॥

अवात् परस्य गाहेर्वाह इत्यादेशः स्यात् । अवगाहते ओवाहइ । अवादिति किम् ? गाहते गाहइ । वृषु मृषु सेचने ।

वृष-कृष-मृष-हृषामृतोऽरिः ॥ ३५४ ॥

एषां ऋतः अरिः इत्ययमादेशः स्यात् । वर्षति वरिसइ । मर्षति मरिसइ । कृषि विलेखने इति भौवादिकस्यैव ग्रहणम्, न तौदादिकस्य, वृषादिसाहचर्यात् । हृषु अलीके । हर्षति हरिसइ । वृधु वृद्धौ ।

वृधेर्ढः ॥ ३५५ ॥

अन्तस्य स्यात् । वर्धते वड्ढइ, 'ऋतोऽद्' (१२०) इत्यकारः । ञित्वरा सम्भ्रमे ।

त्वरस्तुवरः ॥ ३५६ ॥

स्पष्टम् । त्वरते तुवरइ तुवरए । चल कम्पने । चलति चल्लइ चलइ, 'स्फुटि-चल्योर्वा' (३४४) इति वा द्वित्वम् । पत्लृ गतौ ।

शद्लृ-पत्योर्डः ॥ ३५७ ॥

अनयोरन्तस्य डः स्यात् । पतति पडइ । शद्लृ शातने । शीयते सडइ । क्वथे निष्पाके ।

क्वथेर्ढः ॥ ३५८ ॥

अन्तस्य स्यात् । क्वथति कढइ । म्लै हर्षक्षये ।

म्लै वा-वाऔ ॥ ३५९ ॥

अस्य वा वाअ इत्येतावादेशौ स्याताम् । म्लायति वाइ वाअइ । ध्यै चिन्तायाम् ।

ष्ठा-ध्या-गानां ठाअ-झाअ-गाआः ॥ ३६० ॥

एषामेते क्रमेण स्युः ।

ठा-झा-गाश्च वर्त्तमान-भविष्यद्-विध्याद्येकवचनेषु ॥ ३६१ ॥

एषु ष्ठा-ध्या-गानां ठा झा गा इत्येते आदेशाः स्युः ।

ध्यायति=झाअइ झाइ। दध्यौ=झाइअं झाहीअ। ध्याता=झाअहिइ झाहिइ एवं लृट्। ध्यायतु=झाअउ झाउ। अध्यासीत्=झाइअं झाईअ। अत्र 'ठाझा-गाश्चालुङि' इत्येव सूत्रयितुं युक्तम्। गै शब्दे। गायति गाअइ गाइ, पूर्ववत्। घ्रा गन्धोपादाने।

जिघ्रतेः पा-पाऔ ॥ ३६२ ॥

अस्य पा पाअ एतौ स्याताम्। जिघ्रति पाइ पाअइ। जघ्रौ पाहीअ पाईअ पाइअं। ध्मा शब्दा-ऽग्निसंयोगयोः।

उद्ध्मो धूमा ॥ ३६३ ॥

उदः परस्य धमतेः धूमा इत्यादेशः स्यात्। उद्धमति उद्धूमाइ। ष्ठा गतिनिवृत्तौ। तिष्ठति ठाअइ ठाइ, ध्यावत्। स्मृ चिन्तायाम्।

स्मरतेर्भर-सुमरौ ॥ ३६४ ॥

अस्य भर सुमर इत्येतौ स्याताम्। स्मरति भरइ सुमरइ। सृ गतौ।

ऋतोऽरः ॥ ३६५ ॥

धात्वन्तऋकारस्य अरः स्यात्। सरति सरइ। श्रु श्रवणे। शृणोति सुणइ। शुश्राव सुण्णीअ सुणिणअं।

श्वादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा ॥ ३६६ ॥

श्रु वचि नमि रुदि दृशि विदि इत्येतेषां प्रथम-मध्यम-उत्तमपुरुषेषु परेषु सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं इति क्रमेण आदेशाः स्युः, अनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा। श्रोता=सोच्छिहिइ सोच्छिइ सोच्छइ सोच्छहिइ सोच्छेहिइ सोच्छेइ सोच्छिहिए सोच्छिए सोच्छए सोच्छहिए सोच्छेहिए सोच्छेए। श्रोतारः=सोच्छहिंति सोच्छिंति सोच्छंति सोच्छिहिंति सोच्छेहिंति सोच्छेंति। श्रोतासि=सोच्छिसि सोच्छिहिसि सोच्छेसि सोच्छेहिसि सोच्छसि सोच्छहिसि सोच्छिसे सोच्छिहिसे सोच्छेसे सोच्छेहिसे सोच्छसे सोच्छहिसे। श्रोतास्थ=सोच्छिहिह सोच्छेहिह सोच्छहिह सोच्छिह सोच्छेह सोच्छह।

कृ-दा-श्रु-वचि-गमि-रुदि-दृशि-विदिरूपाणां काहं दाहं सोच्छं वोच्छं गच्छं रुच्छं दच्छं वेच्छं ॥ ३६७ ॥

एषामेते क्रमेण स्युः भविष्यत्युत्तमैकवचने। श्रोतास्मि=सोच्छं सोच्छिस्सामि सोच्छेस्सामि सोच्छस्सामि सोच्छिहामि सोच्छेहामि सोच्छहामि सोच्छिहिमि सोच्छेहिमि सोच्छहिमि सोच्छेहिमि ...

सोच्छाहामि सोच्छामि सोच्छहिमि सोच्छमि सोच्छेस्सं सोच्छस्सं
श्रोतास्मः=सोच्छिहिस्सा सोच्छेहिस्सा सोच्छाहिस्सा सोच्छिहित्थ
सोच्छेहित्था सोच्छाहित्था सोच्छहित्था सोच्छिस्सामो सोच्छेस्साम
सोच्छस्सामो सोच्छिहामो सोच्छेहामो सोच्छाहामो सोच्छहामो सोच्छि
हिमो सोच्छिमो साच्छेहिमो सोच्छेमो सोच्छाहिमो सोच्छामो सोच्छ
हिमो सोच्छमो। श्रोष्यति=सोच्छिहिइ इत्यादि। प्रथमे मध्यमस्यैक
वचने च लुड्वत्। बहुवचने तु श्रोष्यथ=सोच्छिहिह सोच्छिह सोच्छे
हिह सोच्छेह सोच्छहिह सोच्छह सोच्छिहित्थ सोच्छित्थ सोच्छे
हित्थ सोच्छेइत्थ सोच्छहित्थ सोच्छइत्थ। मिपि लुट्वत्, मवि च। मु-
मयोस्तु यत्र मो इति तत्र मु-मौ प्रत्येकं प्रयोज्यौ। शृणोतु सुणाउ
शृण्वन्तु सुणंतु। शृणु सुणसु। शृणुत सुणह। शृणोमि सुणमु
शृणमः सुणमो। दृशिर् प्रेक्षणे। इर् इत्।

दृशेः पुलअ-णिअक्क-अवक्खाः ॥ ३६८ ॥

त्र्यक्षरा आदेशाः स्युः। पश्यति पुलअइ णिअक्कइ अवक्खइ। दद्र
पुलईअ णिअक्क(क्की?)अ अवक्खीअ। द्रष्टा दच्छिहिइ इत्यादि वोच्छवत्
कृषि विलेखने। कर्षति करिसइ। गम्लृ गतौ गच्छति गमइ। गन्तास्मि
गच्छं इत्यादि। इति भ्वादिः।

अद भक्षणे।

शेषाणामदन्तता ॥ ३६९ ॥

लुप्तानुबन्धानां शेषाणामकारान्तत्वं स्यात्। अत्ति अअइ। ह
हिंसा-गत्योः।

हन्तेर्म्मः ॥ ३७० ॥

हन्तेर्नस्य म्मः स्यात्। हन्ति हम्मइ। वच परिभाषणे। वक्ति व
अइ। वक्ष्यामि वोच्छं इत्यादि सोच्छवत्। विद ज्ञाने। वेत्ति वे
वेअइ। वेत्स्यामि वेच्छं। अस भुवि। अस्ति अत्थि। सन्ति असन्ति।

असेर्लोपः ॥ ३७१ ॥

असो लोपः स्यात् थास्-सिपोः परयोः। असि सि। थासोऽनुवृत्ति
र्भाव-कर्मणोः सफला। स्थ त्थ।

मि-मो-मु-मानामधो ह्श्च ॥ ३७२ ॥

अस्तेः परेषां मि-मो-मु-मानामधो ह स्यात्, अस्तेश्च लोपः। अम्हि

भूते निपातः। बभूव आसि। मृजूष् शुद्धौ।

मृजेर्लुभ-पुसौ ॥ ३७४ ॥

द्यक्षरौ स्याताम्। मार्ष्टि लुभइ पुसइ 'सुप' इति पाठे सुपइ। रुदिर् अश्रुविमोचने।

रुदेर्वः ॥ ३७५ ॥

रुदेर्दस्य वः स्यात्। रोदिति रुवइ। रुदिष्यामि रुच्छं, वोच्छवत्। इत्यदादयः।

हु दानादनयोः। जुहोति हुण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०) इति ण्णः। ञिभी भये।

भियो भा-बीहौ ॥ ३७६ ॥

भा बीह इत्येतावादेशौ स्याताम्। बिभेति भाइ बीहइ। पृ पालन-पूरणयोः। पिपर्त्ति परइ। डुभृञ् धारण-पोषणयोः। बिभर्त्ति भरइ माङ् माने।

निरो माङो माणः ॥ ३७७ ॥

निरः परस्य माङो माण इत्यादेशः स्यात्। निर्मिमीते णिम्माणइ निरः किम्? मिमीते माइ। डुदाञ् दाने। ददाति दाइ। दातास्मि दाहं डुधाञ् धारण-पोषणयोः।

श्रदो धो दहः ॥ ३७८ ॥

श्रदः परस्य धो दह इत्यादेशः स्यात्। श्रद्दधाति सद्दहइ। श्रद इति किम्? धाइ। विजिर् पृथग्भावे।

उदो विजः ॥ ३७९ ॥

उदः परस्य विजेर्जस्य वः स्यात्। उद्वेविक्ते उद्वेवेक्ति उव्विव्वइ ऋ सृ गतौ। इयर्त्ति अरइ। ससर्त्ति सरइ। इति ह्वादयः।

दिवु क्रीडा-विजिगीषा-व्यवहारद्युति-स्मृति-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति गतिषु। दीव्यति दिवइ। नृती गात्रविनामे। नृत्यति णच्चइ। त्रसि उद्वेगे

त्रसेर्वज्जः ॥ ३८० ॥

स्पष्टम्। त्रस्यति वज्जइ। व्रीड चोदने लज्जायां च। व्रीड्यति वीलइ षूङ् प्राणिप्रसवे। सूयते सूइ। दूङ् परितापे।

स्पष्टम् । दूयते=दूमइ दूमए दूमेइ दूमेए । शो तनूकरणे । श्यति सोइ । दो अवखण्डने । द्यति दोइ । जनी प्रादुर्भावे । जायते जणइ । पद गतौ ।

पदः पालः ॥ ३८२ ॥

आदेशः स्यात् । पद्यते पालइ । बुध अवगमने ।

युधि-बुध्योर्झः ॥ ३८३ ॥

एतयोर्धस्य झः स्यात् । बुध्यते बुज्झइ । युध सम्प्रहारे । युध्यते जुज्झइ । सृज विसर्गे । सृज्यते सज्जइ । शुष शोषणे ।

रुषादीनां दीर्घः ॥ ३८४ ॥

रुषादीनां दीर्घः स्यात् । शुष्यति सूसइ । तुष प्रीतौ । तुष्यति तूसइ । दुष वैकृत्ये । दुष्यति दूसइ । क्रुध कोपे ।

क्रुधेर्झूरः ॥ ३८५ ॥

स्पष्टम् । क्रुध्यति झूरइ । रुष रोषे । रुष्यति रूसइ । गृधु अभिकाङ्क्षायाम् । गृध्यति गधइ । इति दिवादयः ।

षुञ् अभिषवे । सुनोति सुअइ । चिञ् चयने ।

चिञश्चिणः ॥ ३८६ ॥

चिञः चिण इत्यादेशः स्यात् । चिनोति चिणइ । शक्ल शक्तौ ।

शकादीनां द्वित्वम् ॥ ३८७ ॥

शकादीनां द्वित्वं वा स्यात् । शक्नोति सक्कइ । पक्षे–

शकेस्तर-चअ-तीराः ॥ ३८८ ॥

अस्य द्व्यक्षरास्त्रय आदेशाः स्युः । शक्नोति तरइ चअइ तीरइ । अशू व्याप्तौ सङ्घाते च । अश्नुते असइ । ञिधृषा प्रागल्भ्ये । धृष्णोति धसइ । इति स्वादयः ।

तुद व्यथने । तुदति तुअइ । णुद प्रेरणे ।

णुदेर्लोणः ॥ ३८९ ॥

णुदेर्लोण इत्यादेशः स्यात् । नुदति लोणइ । 'णोल्ल' इति पाठे णोल्लइ । कृष विलेखने । कृषति कसइ, 'वृष-कृष-०' (३५४) इति अरिस्तु न, वृषसाहचर्याद् भौवादिकस्यैव ग्रहणात् । ओविजी भये । उद्विजति उव्विवइ, 'उदो विजः' (३७९) इति वः । टुमस्जौ शुद्धौ ।

बुड-खुप्पौ मस्जेः ॥ ३९० ॥

[मस्जेः बुड खुप्प इत्येतावादेशौ स्याताम् ।] मज्जति बुडइ खुप्पइ । तृप तृप्तौ ।

तृपस्थिम्पः ॥ ३९१ ॥

तृपेः थिम्प इत्यादेशः स्यात् । तृपति थिम्पइ । घुण भ्रमणे । घूर्णति घोलइ । पृङ् व्यायामे । प्रियते परइ । मृङ् प्राणत्यागे । म्रियते मरइ । सृज विसर्गे । सृजति सअइ । कृती छेदने । कृन्तति कतइ । खिद परिघाते । खिंदति विसूरइ । पिश अवयवे । पिशति पिसइ । इति तुदादयः ।

रुधिर् आवरणे ।

रुधेर्न्ध-म्मौ ॥ ३९२ ॥

रुधेः धस्य न्ध म्म इत्येतावादेशौ स्याताम् । रुणद्धि रुन्धइ रुम्मइ । भिदिर् विदारणे ।

भिदि-च्छिदोरन्तस्य न्दः ॥ ३९३ ॥

अनयोः दस्य न्दः स्यात् । भिनत्ति भिंदइ । छिदिर् द्वैधीकरणे । छिनत्ति छिंदइ । खिद दैन्ये । खिनत्ति विसूरइ । ओविजी भय-चलनयोः । विनक्ति विअइ । उद्विनक्ति उव्विवइ । इति रुधादयः ।

तनु विस्तारे । तनोति तण्णइ । षणु दाने । सनोति सण्णइ । क्षणु हिंसायाम् । क्षणोति खण्णइ । क्षिणु च – क्षिणोति खिण्णइ । ऋणु गतौ । ऋणोति अण्णइ । तृणु अदने । तृणोति तण्णइ । घृणु दीप्तौ । घृणोति घण्णइ । वनु याचने । वनोति वण्णइ । मनु अवबोधने । मनोति मण्णइ । डुकृञ् करणे ।

कृञः कुणो वा ॥ ३९४ ॥

कृञः कुण इत्यादेशो वा स्यात् । करोति कुणइ करइ ।

कृञः का भूत-भविष्यतोश्च ॥ ३९५ ॥

एतयोरर्थयोः क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु च कृञः का इत्यादेशः स्यात् । चकार काहीअ कम्भं (?) [करिष्यति ?] काहिइ । कर्त्तास्मि काहं, दावत् । इति तनादयः ।

डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये ।

क्रीञः किणः ॥ ३९६ ॥

वेः क्के च ॥ ३९७ ॥

वेः परस्य क्रीणातेः क्के इत्यादेशः स्यात्। चात् किणः। विक्रीणाति विक्केइ विक्किणइ। लूञ् छेदने। लुनाति लुण्णइ, 'श्रु-हु-जि०' (३५०) इति अन्त्यस्य णः पूर्वस्य ह्रस्वश्च। कृञ् हिंसायाम्। कृणाति करइ। धूञ कम्पने। धुनाति धुण्णइ। शॄ हिंसायाम्। शृणाति सरइ। पॄ पालन-पूरणयोः। पृणाति परइ। मॄ हिंसायाम्। मृणाति मरइ। ज्ञा अवबोधने।

ज्ञो जाण-मुणौ ॥ ३९८ ॥

द्व्यक्षरावादेशौ स्याताम्। जानाति जाणइ मुणइ। बध बन्धने। बध्नाति बंधइ। वृङ् सम्भक्तौ। वृणीते वरइ। मृद क्षोदे।

मृदो लः ॥ ३९९ ॥

मृद्नातेः दस्य लः स्यात्। मृद्नाति मलइ। अश भोजने। अश्नाति असइ। पुष पुष्टौ। पुष्णाति पूसइ। ग्रह उपादाने।

ग्रहेर्गेण्हः ॥ ४०० ॥

स्पष्टम्। गृह्णाति गेण्हइ। इति क्र्यादयः।

चुर स्तेये।

णिच एदादेरत आत् ॥ ४०१ ॥

णिच एत् स्यात्, धातोरकारस्य आत् स्यात्।

आवे च ॥ ४०२ ॥

णिचोऽयमपि आदेशः स्यात्। चोरयति चुरेइ चुरावेइ। चिति स्मृत्याम्। चिन्तयति चिंतेइ चिंतावेइ। लक्ष दर्शना-ऽङ्कनयोः। लक्षयति लाखेइ लखावेइ। भक्ष अदने। भक्षयति भाखेइ भखावेइ। गज शब्दे। गाजयति गाजेइ गजावेइ। शठ श्लाघायाम्। शाठयति साठेइ सठावेइ। इति चुरादयः।

भू-हेतुमद् णिच्। भावयति होएइ होआवेइ हुवेइ हुवावेइ। पट-पाटयति फालेइ फलावेइ। जल्पयति जंपेइ जंपावेइ। प्रमीलयति पमिल्लेइ पमिल्लावेइ। अवकाशयति ओवासेइ ओवासावेइ। ग्रासयति विसेइ विसावेइ। अवगाहयति ओगाहेइ ओगाहावेइ। रोषयति रूसेइ रूसावेइ। वर्षयति वरिसेइ वरिसावेइ। वर्धयति वड्ढेइ वड्ढावेइ। त्वरयति तुवरेइ तुवरावेइ। चलयति चल्लेइ चालेइ चल्लावेइ चलावेइ। स्मारयति

भारेइ भरावेइ सुमरेइ सुमरावेइ। सारयति सारेइ सरावेइ। श्रावयति सुण्णेइ सुण्णावेइ। गमयति गामेइ गमावेइ। रोदयति रुवेइ रुवावेइ। पारयति पारेइ पारावेइ। नर्त्तयति णच्चेइ णच्चावेइ। त्रासयति वज्जेइ वज्जावेइ। व्रीडयति वीलेइ वीलावेइ। शुष्यति सूसेइ सूसावेइ। क्रुध्यति झूरेइ झूरावेइ। चिनोति चिण्णेइ चिण्णावेइ। शक्नोति सक्केइ सक्कावेइ, तारेइ तरावेइ, चाएइ चआवेइ, तीरेइ तीरावेइ। घूर्णयति घोलेइ घोलावेइ। रुन्धयति रुंधेइ रुंधावेइ, रुम्भेइ रुम्भावेइ। कारयति कारेइ करावेइ, कुणेइ कुणावेइ। क्रापयति किणेइ किणावेइ। इति हेतुमण्णिच्प्रकरणम्।

यक ईअ-इज्जौ ॥ ४०३ ॥

यको द्व्यक्षरावादेशौ स्याताम्। भूयते होईअइ होइज्जइ हुवीअइ हुविज्जइ।

भाव-कर्मणोर्वश्च ॥ ४०४ ॥

श्रु हु जि लू धू एषामन्ते वः स्यात्, णश्च भाव-कर्मणोः। जीयते जिव्वइ जिण्णीअइ जिणिज्जइ।

गमादीनां द्वित्वं वा ॥ ४०५ ॥

एषां द्वित्वं वा स्याद् भाव-कर्मणोः। हस्यते हस्सइ हसीअइ हसिज्जइ। रम्यते रम्मइ रमीअइ रमिज्जइ।

हृ-क्रोर्हीर-कीरौ ॥ ४०६ ॥

हृञ्-कृञोः क्रमाद् हीर कीर इत्येतौ स्यातां भाव-कर्मणोः। ह्रियते हीरइ। श्रूयते सुव्वइ सुण्णीअइ सुणिज्जइ। गम्यते गम्मइ गमीअइ गमिज्जइ।

दुहि-लिहि-वहां दुब्भ-लिब्भ-वब्भाः ॥ ४०७ ॥

एषां क्रमेण द्व्यक्षरा आदेशाः स्युः भाव-कर्मणोः। उह्यते वब्भइ। दुह्यते दुब्भइ। लिह्यते लिब्भइ। हूयते हुव्वइ हुण्णीअइ हुणिज्जइ। क्रियते कीरइ। लूयते लुव्वइ लुण्णीअइ लुणिज्जइ। धूयते धुव्वइ धुण्णीअइ धुणिज्जइ।

ज्ञो णज्ज-णव्वौ वा ॥ ४०८ ॥

ज्ञाधातोः द्व्यक्षरावादेशौ वा स्यातां भाव-कर्मणोः। ज्ञायते णज्जइ णव्व। पक्षे जाणीअइ जाणिज्जइ, मुणीअइ मुणिज्जइ ॥

ग्रहे दीर्घो वा ॥ ४०९ ॥

स्पष्टम् । गृह्यते गाहिज्जइ । पक्षे गेण्हिज्जइ ।

॥ इति भावकर्मप्रकरणम् ॥ इति तिङन्तम् ॥

क्ते हुः ॥ ४१० ॥

भुवो हुरादेशः स्यात् क्ते । भूतं हुअं ।

क्ते तुरः ॥ ४११ ॥

त्वरतेः तुर इत्यादेशः स्यात् क्ते ।

क्ते ॥ ४१२ ॥

धातोरन्त्याकारस्य इः स्यात् क्ते । त्वरितं तुरिअं । पटितं फलिअं ।

क्तेन दिण्णादयः ॥ ४१३ ॥

दिण्ण इत्यादयः शब्दाः क्तेन सह निपात्यन्ते । दाञ् दत्तं दिण्णं । रुदिर् रुदितं रुण्णं । त्रसी त्रस्तं हित्थं । दह भस्मीकरणे दग्धं डड्ढं । रञ्ज रक्तं रत्तं । दंश दष्टं डक्कं । रुधिर् रुद्धं रुद्धं इत्यादयः ।

भुजादीनां क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु लोपः ॥ ११४ ॥

एषामन्तस्य लोपो वा स्यात् ।

क्त्व ऊणः ॥ ४१५ ॥

क्त्वाप्रत्ययस्य ऊण इत्यादेशः स्यात् । भुक्त्वा भोऊण । भोक्तुम् भोउं । भोक्तव्यम् भोअव्वं । विदित्वा वेऊण । वेत्तुम् वेउं । वेत्तव्यम् वेअव्वं । एवं रुदिर् ।

घे क्त्वा-तुमुन्-तव्येषु ॥ ४१६ ॥

ग्रहेः घे इत्यादेशः स्याद् एषु परेषु । गृहीत्वा घेऊण । ग्रहीतुम् घेउं । ग्रहीतव्यम् घेअव्वं । कृत्वा काऊण । कर्त्तुम् काउं । कर्त्तव्यम् काअव्वं ।

तृन इरः शीले ॥ ४१७ ॥

शीलार्थे तृन इर इत्यादेशः स्यात् । गन्ता गमिरो, गमनशील इत्यर्थः ।

न्त-माणौ शतृ-शानचः ॥ ४१८ ॥

शतृ शानच् इत्येतयोः क्रमेण न्त माण इत्येतावादेशौ स्याताम् । भवन् हुवंतो । यजमानः जअमाणो ।

ईत् स्त्रियाम् ॥ ४१९ ॥

शतृ-शानचोः ईदादेशः स्याद् न्त-माणौ च । वदन्ती वदई । यजमाना जअमाणी । पक्षे वदंती जअमाणा ।

इति श्रीज्योतिर्वित्सरसात्मजरघुनाथकविकण्ठीरवविरचिते प्राकृतानन्दे द्वितीयः परिच्छेदः ।

*

॥ समाप्तः प्राकृतानन्दः ॥

[॥ संवत् १७२६ अश्विन सुदि १२ रविदिने लिखितं लाभपुरनगरमध्ये शुभं भवतु । ॥ श्री ॥ ॥ छ ॥]

परिशिष्टम्

प्राकृतशब्दानुक्रमणिका

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
ओवासइ	अवकासते	३५१
ओवासावेइ	अवकाशयति	४०२
ओवासेइ	अवकाशयति	४०२
ओवाहइ	अवगाहते	३५३
ओहलं	उलूहलम्	१८७A
अंकोल्लं	अंकोठं	२००
अंबं	आम्रं	२०८
अंसू	अश्रु	२१७
	क	
कइअवो	कैतवः	७१
कइआ	कदा	२२५
कउरवो	कौरवः	७४
कउसलो	कौशलः	७५
कच्छा	कक्षा	१६६
कज्जो	कार्यः	११२
कढइ	क्वथति	३५८
कढोरं	कठोरं	१९९
कण्हो	कृष्णः	१०,१२०,१३३
कण्हं	कृष्णम्	२
कण्हत्तणं	कृष्णत्वम्	३१३
कण्हदा	कृष्णता	३१३
कतइ	कृन्तति	३९१
कत्तरी	कर्त्तरी	१८०
कत्तो	कस्मात्	२२१
कत्थ	कदा	२२५
कदो	कस्मात्	२२१
कम्भं (?)	करिष्यति (?)	३९५
कम्मि	कदा	२२५
कम्मो	कर्म	२४२
कमंधो	कबन्धः	८७
करइ	करोति.	३९४
करइ	कृणाति	३९७
करावेइ	कारयति	४०२
करिसइ	कर्षति	३६८

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
कस्स	कस्य	२२
कस्सि	कस्मिन्	२२
कस्सि	कदा	२२
कसइ	कृषति	३८
कलुणं	करुणं	२०
कलंबो	कदम्बः	८
कहावणो	कार्षापणः	१२
काहिं	कस्मिन्	२२
काहिं	कदा	२२
का	कस्मात्	२२
काअव्वं	कर्त्तव्यम्	४१
काआ	का	२८
काइ	का	२८
काइं	कानि	२८
काउं	कर्त्तुम्	४१
काऊण	कृत्वा	४१
काए	का	२८
कादु	कस्मात्	२२
काणं	केषां	२२
कारेइ	कारयति	४०
कालाअसं	कालायसं	२१
कालासं	कालायसं	२१
कास	कस्य	२२
कासइ	कासते	३५
कासुत्तो	केभ्यः	२२
काहि	कस्मात्	२२
काहितो	केभ्यः	२२
काहीअ	करिष्यति (?)	३९
काहे	कदा	२२
काहं	कर्त्तास्मि	३९
किच्चा	कृत्या	१६
कित्ती	कीर्त्तिः	१७
किणइ	क्रीणाति	३९
किणावेइ	क्रापयति	४०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
किरिआ	क्रिया	१७१
किलिट्ठं	क्लिष्टं	२०८
किलित्तं	क्लृप्तं	१९१
किवा	कृपा	१६५
किसणो	कृष्णः (भगवति)	१३३
किसरा	कृशरा	१६५
किस्सा	कस्याः	२८५
किं	किम्	२८७
की	का	१७४,२८४
कीअ	कस्याः	२८५
कीआ	कस्याः	२८५
कीई	कस्याः	२८५
कीए	कस्याः	२८५
कीरइ	क्रियते	४०७
कीसे	कस्याः	२८५
कुक्खेअओ	कौक्षेयकः	७६
कुच्छी	कुक्षिः	१७६
कुणइ	करोति	३९४
कुणावेइ	कारयति	४०२
कुणेइ	कारयति	४०२
के	के	२१९
केढवो	कैटभः	९०
केरिसो	कीदृशः	५४
केलासो	कैलासः	६९
केवट्टो	कैवर्त्तः	११५
केसिं	केषां	२२३
केसु	केषु	२२५
को	कः	२१९
कोत्थुहो	कौस्तुभः	१०८
कोसलो	कौशलः	७५
कंदोट्टो	कमलं	२१५
	ख	
खग्गो	खड्ग.	३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
खमा	क्षमा	१६९
खमा	क्ष्मा	१७२
खहिइ	खादिता	३३९
खाइ	खादति	३३९
खाउ	खादतु	३३९
खाणू	स्थाणुः	१५१
खादीअ	अखादीत्	३३९
खादीअं	अखादीत्	३३९
खाहिइ	खादिष्यति	३३९
खाहीअ	चखाद	३३९
खिणइ	क्षिणोति	३९३
खुज्जो	कुब्जः	९३
खुप्पइ	मज्जति	३९०
खोडओ	स्फोटकः	१११
खंभो	स्तम्भः	११०
	ग	
गउरवं	गौरवं	१९७
गग्गरो	गद्गदः	८४
गच्छं	गन्तास्मि	३६८
गजावेइ	गाजयति	४०२
गड्डो	गर्त्तः	११७
गधइ	गृध्यति	३८५
गब्भिणो	गर्भितः	८०
गब्भिणं	गर्भितं	१९७
गम्मइ	गम्यते	४०६
गमइ	गच्छति	३६८
गमावेइ	गमयति	४०२
गमिज्जइ	गम्यते	४०६
गमिरो	गन्ता	४१७
गमीअइ	गम्यते	४०६
गरुअं	गुरु	२१७
गरुई	गुर्वी	१७९
गहवई	गृहपतिः	१४५, २१२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
झाअहिइ	ध्याता	३६१
झाइ	ध्यायति	३६१
झाइअं	दध्यौ	३६१
झाइअं	अध्यासीत्	३६१
झाइअं	अध्यासीत्	३६१
झाउ	ध्यायतु	३६१
झाहीअ	दध्यौ	३६१
झाहिइ	ध्याता	३६१
झिज्जइ	क्षयति	३४०
झिज्जए	क्षयति	३४०
झूरावेइ	क्रुध्यति	४०२
झूरइ	क्रुध्यति	३८५
झूरेइ	क्रुध्यति	४०२
	ठ	
ठाअइ	तिष्ठति	३६२
ठाइ	तिष्ठति	३६२
	ड	
डट्ठं	दष्टं	४१३
डड्ढं	दग्धं	४१३
डसणो	दशनः	६४
डोला	दोला	१६८
डंडो	दण्डः	६४
	ण	
ण्हाओ	स्नातः	११९
णइसोत्तो	नदीस्रोतः	१
णच्चइ	नृत्यति	३७९
णच्चावेइ	नर्त्तयति	४०२
णच्चेइ	नर्तयति	४०२
णज्जइ	ज्ञायते	४०८
णव्वइ	ज्ञायते	४०८
णाराअणम्मि	नारायणे	१४, २३
णाराअणस्स	नारायणाय	१९
णाराअणस्स	नारायणस्य	१४, २१
णाराअणा	नारायणाः	१४

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्
णाराअणा	नारायणात्
णाराअणादु	नारायणात्
णाराअणादो	नारायणात्
णाराअणाणं	नारायणेभ्यः
णाराअणाणं	नारायणानाँ
णाराअणासुन्तो	नारायणेभ्यः
णाराअणाहि	नारायणात्
णाराअणाहिंतो	नारायणेभ्यः
णाराअणे	नारायणान्
णाराअणे	नारायणौ
णारायणे	नारायणे
णाराअणेण	नारायणेन
णाराअणेसु	नारायणेषु
णाराअणेहि	नारायणैः
णाराअणो	नारायणः
णाहलो	लाहलः
णांगलो	लाङ्गलः
णिअक्कइ	पश्यति
णिअक्क [क्को ?] अ	दृष्ट्वा
णिडालं	ललाटं
णिद्दालू	निद्रावान्
णिप्फंदो	निस्पन्दः
णिम्माणइ	निर्मिमीते
णिवत्तो	निवर्त्तः
णिसढो	निषधः
णिस्सासो	निःश्वासः
णिसा	निशा
णिहिओ	निहितः
णिहित्तो	निहितः
णिहसो	निकषः
णीसासो	निःश्वासः
णे	अस्मान्
णेउरं	नूपुरं
णेद्दा	निद्रा

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
णेहो	स्नेहः	३८
णोभलिआ	नवफलिका	१६४
णोमल्लिआ	नवमल्लिका	१६४
णोल्लइ	नुदति	३८९
णोहलो	दोहदः	८३, ९७
त्थ	स्थ	३७१
तइ	त्वया	२५५
तइ	त्वयि	२६३
तइआ	तदा	२४६
तइणा	तेन	२४३
तइत्तो	त्वत्	२५९
तए	त्वया	२५५
तए	त्वयि	२६३
तओ	तस्मात्	२४४
तण्णइ	तनोति	३९३
तण्णइ	तृणोति	३९३
तणुई	तन्वी	१८१
तत्थ	तस्मिन्	२४६
तत्तो	त्वत्	२५९
तत्तो	तस्मात्	२४४
तदो	तस्मात्	२४४
तम्मि	तस्मिन्	२४६
तरइ	शक्नोति	३८८
तरावेइ	शक्नोति	४०२
तलवेण्ठअं	तालवृन्तकं	२०७
तवो	तपः	२८२
तस्स	तस्य	२४५
तस्सि	तस्मिन्	२४६
तहिं	तस्मिन्	२४६
तहे	तदा	२४६
ता	तान्	२४३
ताइं	तानि	२८७
ताणं	तेषां	२४६

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
तारेइ	शक्नोति	४०२
तालवेण्ठअं	तालवृन्तकं	२०७
तास	तस्य	२४४
तासुत्तो	तेभ्यः	२४४
ताहि	तस्मात्	२४४
तिण्हं	तीक्ष्णं	२०४
तिण्णि	त्रयः	१४९
ती	ता	१७४
तीण्हं	त्रयाणाम्	१५०
तीरइ	शक्नोति	३८८
तीरावेइ	शक्नोति	४०२
तीरेइ	शक्नोती	४०२
तीसु	त्रिषु	१५०
तीसुत्तो	त्रिभ्यः	१५०
तीहिं	त्रिभिः	१५०
तीहितो	त्रिभ्यः	१५०
तुअइ	तुदति	३८८
तुए	त्वया	२५५
तुए	त्वयि	२६३
तुज्झ	तव	२६१
तुज्झाणं	युष्माकम्	२६२
तुज्झे	यूयम्,	२५२
	युष्मान्	२५४
तुज्झेसु	युष्मासु	२६४
तुज्झेहिं	युष्माभिः	२५८
तुण्हिओ	तूष्णीकः	१३२
तुण्हिक्को	तूष्णीकः	१३२
तुब्भ	तव	२६१
तुब्भेहिं	युष्माभिः	२५८
तुम्ह	तव	२६१
तुम्हाणं	युष्माकम्	२६२
तुम्हासुत्तो	युष्मत्	२६०
तुम्हाहितो	युष्मत्	२६०

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
तुम्हेसु	युष्मासु	२६४
तुम्हेहिं	युष्माभिः	२५८
तुमए	त्वया	२५५
तुमए	त्वयि	२६२
तुमम्मि	त्वयि	२६३
तुमाउ	त्वत्	२५६
तुमादो	त्वत्	२५६
तुमाहि	त्वत्	२५६
तुमो	तव	२६१
तुमं	त्वाम्	२५३
तुमं	त्वं	२५१
तुरिग्रं	त्वरितं	४१२
तुवरावेइ	त्वरयति	४०२
तुवरेइ	त्वरयति	४०२
तुह	तव	२६१
तूरं	तूर्यं	१९६
तूसइ	तुष्यति	३८४
ते	ते	२४३
तेण	तेन	२४३
तेरहो	त्रयोदशः	१०१
तेलोक्कं	त्रैलोक्यं	१९१
तेसु	तेषु	२४६
तेसिं	तेषां	२४६
तेहिं	तैः	२४३
त्तं	त्वाम्	२५३
तं	तम्	२४३
तं	त्वं	२५१
तंबो	स्तम्बः	१०९
तंबं	ताम्रं	२०८
	थ	
थाणू	स्थाणुः (हरवाचके)	१५१
थिम्पइ	तृपति	३९१
	द	
दश्रो	दतः	१०४

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्रा
दइवं	देवं	१९
दच्छिहिइ	द्रष्टा	३६
दसमुहो	दशमुखः	१०
दसरहो	दशरथः	१०
दहमुहो	दशमुखः	१०
दहरहो	दशरथः	१०
दाइ	ददाति	३७
दाडिमं	दाडिमं	१९
दालिमं	दाडिमं	१९
दाहं	दातास्मि	३७
दिग्ररो	देवरः	६
दिग्रसो	दिवसः	१०
दिग्रहो	दिवसः	१०
दिग्रा	द्यौः	२८
दिट्ठी	दृष्टिः	१७
दिण्णं	दत्तं	४१
दिद्धी	दुहिता	२१
दिवइ	दीव्यति	३७
दिसा	दिक्	२८
दुग्रल्लं	दूकूलं	१८
दुऊलं	दुकूलं	१८
दुश्रो	द्रुतः	१०
दुक्खिग्रो	दुःखितः	१३
दुब्भइ	दुह्यते	४०
दुवे	द्वौ	१४
दुहिग्रो	दुःखितः	१३
दूमइ	दूयते	३८
दूमए	दूयते	३८
दूमेइ	दूयते	३८
दूमेए	दूयते	३८
दूसइ	दुष्यति	३८
देग्ररो	देवरः	६
देव्वं	दैवं	१९
दोइ	द्यति	३८
दोण्हं	द्वयोः	१४

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
मंसू	श्मश्रुः	२१७
मंसं	मांसं	६
	र	
रअणं	रत्नम्	२०८
रअणम्	रत्नमुट्	२८०
रच्छा	रक्षा	१६९
रत्तं	रक्तं	४१३
रण्णा	राज्ञा	२३६
रण्णाइं	अरण्यानि	१८५
रण्णेण	अरण्येन	१८५
रण्णो	राज्ञः	२३७
रण्णं	अरण्यं	१८४
रमणिज्जा	रमणीया	१६८
रमणिज्जो	रमणीयः	८६
रम्मइ	रम्यते	४०५
रमिज्जइ	रम्यते	४०५
रमीअइ	रम्यते	४०५
राअम्मि	रागे	२६
राअम्मि	राज्ञि	२३८
राअस्स	रागाय,	
	रागस्य	२६
राआ	राजा	२३०
राआ	राज्ञः	२३७
राआ	रागाः	२६
	रागान्	२६
	रागात्	२६
राआणो	राज्ञः	२३४
	राजानः	२३२
राआणं	राज्ञां	२३८
राआणं	रागेभ्यः,	२६
	रागाणाम्	२६
राआदु	रागात्	२६
राआदु	राज्ञः	२३७
राआदो	रागात्	२६
राआदो	राज्ञः	२३७
राआसुत्तो	रागेभ्यः	२६
राआसुतो	राजभ्यः	२३७
राआहि	रागात्	२६
राआहि	राज्ञः	२३७
राआहिंतो	रागेभ्यः	२६
राआहिंतो	राजभ्यः	२३७
राइणा	राज्ञा	२३७
राइणो	राज्ञः	२३७
राए	रागान्,	२६
	रागाः,	२६
	रागे	२६
राए	राज्ञः,	२३४
	राज्ञि	२३८
राएण	रागेण	२६
राएसु	रागेषु	२६
राएसु	राजसु	२३८
राएहिं	रागैः	२६
राएहिं	राजभिः	२३७
राओ	रागः	२६
राअं	राजानं	२३३
राअं	रागम्	२६
रामो	रामः	१
राहा	राधा	१६९
रिच्छो	ऋक्षः	११८
रिणं	ऋणं	१९०
रिद्धो	ऋद्धः	६५
रुक्खो	वृक्षः	६७
रुच्छं	रुदिष्यामि	३७५
रुद्धं	रुद्धं	४१३
रुण्णं	रुदितं	४१३
रुप्पिणी	रुक्मिणी	१८१
रुम्भावेइ	रुन्धयति	४०२
रुम्भेइ	रुन्धयति	३०२
रुम्मइ	रुणद्धि	३९२
रुवइ	रोदिति	३७५
रुवावेइ	रोयदति	४०२

प्राकृतशब्द:	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सुंडो	शौण्ड:	७६
सुंदेरं	सौन्दर्यं	१६६
सूइ	सूयते	३८७
सूरो	सूर्य:	११४
सूसइ	शुष्यति	३८४
सूसावेइ	शुष्यति	४०२
सूसेइ		
से	तस्य	२४५
सेज्जस	शय्याया:	१६२
सेज्जा	शय्या:	१५७
	शय्याया:	१६१
सेज्जाइ	शय्याया:	१६२
सेज्जाइ	शय्यया	१६१
सेज्जाइ	शय्यायाम्	१६२
सेज्जाए	शय्यया	१६१
	शय्याया:	१६२
	शय्यायाम्	१६२
सेज्जाउ	शय्या:	१५७
		१५९
	शय्याया:	१६२
सेज्जाओ	शय्या:	१५७
		१५९
	शय्याया:	१६२
सेज्जाणं	शय्यानाम्	१६२
सेज्जादु		
सेज्जादो	शय्याया:	१६१
सेज्जाहि		
सेज्जासु	शय्यासु	१६२
सेज्जासुन्तो	शय्याभ्य:	११६
सेज्जाहिंतो		
सेज्जाहिं	शय्याभि:	१६१
सेज्जं	शय्याम्	१५८
सेज्या	शय्या	१५६
सेत्तं	शैत्यं	१६१
सेलो	शैल:	६९

प्राकृतशब्द:	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सेव्वा	सेवा	१७०
सेवा		
सो	स:	२४३
सोअमल्लं	सौकुमार्यं	२०३
सोइ	श्वयति	८१
सोच्छइ	श्रोता	३६६
सोच्छए	,,	,,
सोच्छहिइ	,,	,,
सोच्छहिए	,,	,,
सोच्छिइ	,,	,,
सोच्छिए	,,	,,
सोच्छिहिइ	,,	,,
सोच्छिहिए	,,	,,
सोच्छेइ	,,	,,
सोच्छेए	,,	,,
सोच्छेहिइ	,,	,,
सोच्छेहिए	,,	,,
सोच्छहिंति	श्रोतार:	३६६
सोच्छंति	,,	,,
सोच्छिहिंति	,,	,,
सोच्छिंति	,,	,,
सोच्छेंति	,,	,,
सोच्छसि	श्रोतासि	३६६
सोच्छसे	,,	,,
सोच्छहिसि	,,	,,
सोच्छहिसे	,,	,,
सोच्छिसि	,,	,,
सोच्छिसे	,,	,,
सोच्छिहिसि	,,	,,
सोच्छिहिसे	,,	,,
सोच्छेसि	,,	,,
सोच्छेसे	,,	,,
सोच्छेहिसि	,,	,,
सोच्छेहिसे	,,	,,
सोच्छइत्थ	श्रोष्यथ	३६६, ३६७ (बहुवचने)

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सोच्छह	श्रोष्यथ	२६७
सोच्छहिह	,,	,,
सोच्छिह	,,	,,
सोच्छिहिह	,,	,,
सोच्छेह	,,	,,
सोच्छेहिह	,,	,,
सोच्छहित्थ	श्रोष्यथ (बहुवचने)	३६७
सोच्छहिह	,,	,,
सोच्छित्थ	,,	,,
सोच्छिह	,,	,,
सोच्छिहित्थ	,,	,,
सोच्छिहिह	,,	,,
सोच्छेह	,,	,,
सोच्छेहित्था	,,	,,
सोच्छेहिह	,,	,,
सोच्छिहिइ	श्रोष्यति इत्यादि	२६७
सोच्छमि	श्रोतास्मि	३३७
सोच्छस्सामि	,,	,,
सोच्छस्सं	,,	,,
सोच्छहामि	,,	,,
सोच्छहिमि	,,	,,
सोच्छामि	,,	,,
सोच्छाहामि	,,	,,
सोच्छिमि	,,	,,
सोच्छिस्सामि	,,	,,
सोच्छिहामि	,,	,,
सोच्छेमि	,,	,,
सोच्छेस्सामि	,,	,,
सोच्छेस्सं	,,	,,
सोच्छेहामि	,,	,,
सोच्छेहिमि	,,	,,
सोच्छं	,,	,,
सोच्छमो	श्रोतास्मः	३६७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
सोच्छस्सामो	श्रोतास्मः	३६७
सोच्छहामो	,,	,,
सोच्छहित्था	,,	,,
सोच्छहिमो	,,	,,
सोच्छामो	,,	,,
सोच्छाहामो	,,	,,
सोच्छाहित्था	,,	,,
सोच्छाहिमो	,,	,,
सोच्छाहिस्सा	,,	,,
सोच्छिमो	,,	,,
सोच्छिस्सामो	,,	,,
सोच्छिहामो	,,	,,
सोच्छिहित्था	,,	,,
सोच्छिहिमो	,,	,,
सोच्छिहित्था	,,	,,
सोच्छेमो	,,	,,
सोच्छेस्सामो	,,	,,
सोच्छेहामो	,,	,,
सोच्छेहित्था	,,	,,
सोच्छेहिमो	,,	,,
सोच्छेहिस्सा	,,	,,
सोण्हा	स्नुषा	१६९
सोरिअं	शौर्यं	२०२
सोहा	शोभा	१६८
संका	शङ्का	७
सङ्का		
संकंतो	संक्रान्तः	१३०
संजदो	संयतः	६२
संझा	संध्या	१६९
संवत्तो	संवर्त्तः	११६
संविल्लइ	संवेष्टते	३४३
संवुदी	संवृत्तिः	१७५

ह

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हदो	हतः	६३
हम्मइ	हन्ति	३७०

प्राकृतशब्द:	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हरिसइ	हर्षति	३५४
हलद्रा	हरिद्रा	१६५
हलद्दा(द्रा)	हरिद्रा	१७४
हलद्दा	हरिद्रा	१६५
हलद्दो	हरिद्रा	१७४
हलिश्रो	हालिक:	४५
हविधानं	बभूव	३३२
हस्सइ	हस्यते	४०५
हसिज्जइ	हस्यते	४०३
हसिअइ	हस्यते	४०५
हलिश्रो	हालिक:	४५
हिअयं	हृदयं	१६०
हित्थं	त्रस्तं	४१३
हिरी	ह्री:	१८१
हीरइ	ह्रियते	४०६
हुअं	भूतं	४१०
हुणइ	जुहोति	३७५
हुणिज्जइ	हूयते	४०७
हुण्णीअइ	हूयते	४०७
हुव्वइ	हूयते	४०७
हुव्वंतो	भवन्	४१८
हुवइ	भवति	३१६
हुवइत्थ	भविष्यथ	३३७
हुवइत्था	भवथ, भवथ:	३२४
हुवउ	भवतु	३३७
	बभूव	३३१
हुवए	भवति	३१६
हुवज्ज	भवति	३२२
	भवन्ति	३२३
	भवत:	३२३
हुवज्जा	भवति	३२२
हुवज्जा	भवन्ति	३२३
	भवत:	३२३
हुवम	भवाम:	३२७
	भवाम:	३२७

प्राकृतशब्द	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हुवमि	भवामि	३[illegible]
हुवमु	बभूव	३[illegible]
	भवाम:	३[illegible]
	भवाव:	३[illegible]
	भविष्यामि	३[illegible]
	भवानि	३[illegible]
हुवमो	भविष्याम:	३[illegible]
	भवाम	३[illegible]
	भवाम:	३[illegible]
	भवाव:	३[illegible]
	बभूविम	३[illegible]
हुवस्साम	भविष्याम:	३[illegible]
हुवस्सामि	भविष्यामि	३३६–३[illegible]
हुवस्सामु	भविष्याम:	३[illegible]
हुवस्सामो	भविष्याम:	३[illegible]
हुवसि	भवसि	३[illegible]
हुवसु	बभूविथ	३[illegible]
	भवितासि	३[illegible]
	भव	३[illegible]
हुवसे	भवसि	३[illegible]
हुवस्सं	भविष्यामि	३[illegible]
हुवह	बभूव	३[illegible]
	भवथ:	३[illegible]
	भवथ	३[illegible]
	भवत	३[illegible]
	भवितास्थ	३[illegible]
हुवहाम	भविष्याम:	३[illegible]
हुवहामि	भविष्यामि	३[illegible]
		३[illegible]
हुवहामु	भविष्याम:	३[illegible]
हुवहामो	भविष्याम:	३[illegible]
हुवहिइ	भविता	३[illegible]
हुवहिए	भविष्यति	३[illegible]
हुवहित्था	भविष्याम:	३[illegible]
हुवहित्था	भविष्याम:	३[illegible]

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हुवहिम	भविष्यामः	३३७
हुवहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवहिय	भविष्यति	३३७
हुवहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	
हुवहिसि	भविष्यसि	३३७
	भवितासि	३३४
हुवहिसे	भविष्यसि	३३७
	भवितासि	३३४
हुवहिंति	भवितारः	३३४
	भविष्यन्ति	३३७
हुवहिह	भविष्यथ	३३७
	भवितास्थ	३३४
हुवाम	भवामः	३२७
	भवावः	
हुवामि	भवामि	३२६
हुवामु	भविष्यामि	३३६
	भवानि	३३७
	भवामः	
	भवावः	३२७
हुवामो	भवामः	३२६
	भवावः	३२७
	भवाम	३२७
	भविष्यामः	३३७
हुवावेइ	भावयति	४०२
हुवाहाम	भविष्यामः	३३७
हुवाहामि	भविष्यामि	३३७
		३३६
हुवाहामु	भविष्यामः	३३७
हुवाहामो	भविष्यामः	३३७
हुवाहित्था	भविष्यामः	३३७

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
हुवाहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवाहिमु	भविष्याम	३३७
हुवाहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवाहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	३३७
हुविअं	अभूत्	३३७
	बभूव	३२६
हुविज्जइ	भूयते	४०३
हुवित्थ	भविष्यथ	३३७
हुवित्था	भवथः, भवथ	३२४
हुविम	भवामः, भवावः	३२७
हुविमु		
हुविमो	भविष्यामः भवाम	३३७
	भवामः, भवावः	३२७
हुविस्साम	भविष्यामः	३३७
हुविस्सामु	भविष्यामः	३३७
हुविस्सामो	भविष्यामः	३३७
हुविहाम	भविष्यामः	३३७
हुविहामु	भविष्यामः	३३७
हुविहामो	भविष्यामः	३३७
	भविष्याम	३३७
हुविहित्था	भविष्यामः	३३७
	भविष्याम	३३७
हुविहिंति	भवितारः	३३४
हुविहिम	भविष्यामः	३३७
हुविहिमु	भविष्यामः	३३७
हुविहिमो	भविष्यामः	३३७
	भविष्याम	३३७
हुविहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	३३७
हुवीअ	बभूव	३२८
	अभूत्	३३७
हुवीअइ	[illegible]	[illegible]

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	भावयति	४०२
हुवेउ	भवतु	३२७
	बभूव	३३१
हुवेए	भवति	३१९
हुवेज्ज	भवति	३२२
हुवेज्जा	भवन्ति	३२३
	भवतः	३२३
	भवति	३२२
हुवेमः	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
हुवेमि	भवामि	३२६
हुवेमु	बभूव	३३२
	भवामः	३२७
	भवावः	३२७
	भवानि	३३७
	भविष्यामि	३३६
हुवेमो	भविष्यामः	३३७
	भवाम	३३७
	भवामः, भवावः	३२७
	बभूविम	३३२
हुवेस्साम	भविष्यामः	३३७
हुवेस्सामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेस्सामु	भविष्यामः	३३७
हुवेस्सामो	भविष्यामः	३३७
हुवेसि	भवसि	३२४
हुवेसु	भवितासि	३३४
	बभूविथ	३३२
	भव	३३७
हुवेसे	भवसि	३२४
हुवेस्सं	भविष्यामि	३३७
		३३६
हुवेह	बभूव	३३२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
	भवितास्थ	३३४
हुवेहाम	भविष्यामः	३३७
हुवेहामि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेहामु	भविष्यामः	३३७
हुवेहामो	भविष्यामः	३३७
हुवेहिइ	भविता	३३३
	भविष्यति	३३७
हुवेहिए	भविष्यति	३३७
हुवेहित्था	भविष्याम	३३७
हुवेहिम	भविष्यामः	३३७
हुवेहिमि	भविष्यामि	३३६
		३३७
हुवेहिमु	भविष्यामः	३३७
हुवेहिमो	भविष्यामः	३३७
हुवेहिस्सा	भवितास्मः	३३७
	भविष्यामः	३३७
हुवेहिसि	भविष्यसि	३३७
	भवितासि	३३४
हुवेहिसे	भवितासि	३३४
	भविष्यसि	३३७
हुवेहिह	भविष्यथ	३३७
	भवितास्थ	३३४
हुवेहिंति	भविष्यन्ति	३३७
	भवितारः	३३४
हुवेंति	भवन्ति, भवतः	३२३
हुवेंतु	भवन्तु	३३७
	बभूवुः	३३२
	भवितारः	३३४
हुवंति	भवतः, भवन्ति	३२३
हुवंतु	भवितारः	३२४
	भवन्तु	३३७
	बभूवुः	३३२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरूपम्	सूत्राणि
होहीअ	बभूव	३३०
	अभूत्	३३७
होंति	भवन्ति	३२३
होंतु	बभूवुः	३३२

प्राकृतशब्दः	संस्कृतरू
	भवितारः
	भवन्तु
हं	अहम्

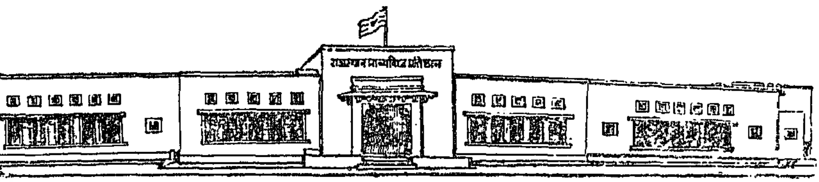
सानन्दं प्राकृतानन्दे शब्दानामनुसूचिका । मुनीनां प्रीतये सेयं जिनविजयसू
वृगिन्दुनभनेत्राब्दे मासे भाद्रपदे शुभे । कृष्णाष्टम्यां गुरौ वारे कृता गोप

राजस्थान सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

(Rajasthan Oriental Research Institute)

जोधपुर



सूची-पत्र

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक – पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

अक्टबर १९६३ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

१. संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश

१. **प्रमाणमंजरी**, तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक – मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर। मूल्य–६
२. **यन्त्रराजरचना**, महाराजा-सवाईजयसिंह-कारित। सम्पादक–स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर। मूल्य–
३. **महर्षिकुलवैभवम्**, स्व० पं० मधुसूदनओझा-प्रणीत, भाग १, सम्पादक–म० म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी। मूल्य–१०
४. **महर्षिकुलवैभवम्**, स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणीत, भाग २, मूलमात्रम् सम्पादक श्रीप्रद्युम्न ओझा। मूल्य–
५. **तर्कसंग्रह**, अन्नंभट्टकृत, सम्पादक–डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम.ए., पी-एच. डी., मूल्य–
६. **कारकसंबंधोद्योत**, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक–डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य–
७. **वृत्तिदीपिका**, मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक–स्व.पं. पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्या मूल्य–
८. **शब्दरत्नप्रदीप**, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक–डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच मूल्य–
९. **कृष्णगीति**, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–
१०. **नृत्तसंग्रह**, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–
११. **शृङ्गारहारावली**, श्रीहर्षकवि-रचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच.डी., डी.लिट्। मूल्य–
१२. **राजविनोदमहाकाव्य**, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–
१३. **चक्रपाणिविजय महाकाव्य**, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक–पं० श्रीकेशवराम का शास्त्री। मूल्य–
१४. **नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग)**, महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक–प्रो. रसिकलाल लाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–
१५. **उक्तिरत्नाकर**, साधसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी, तत्त्वाचार्य, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–
१६. **दुर्गापुष्पाञ्जलि**, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्वि साहित्याचार्य। मूल्य–
१७. **कर्णकुतूहल**, महाकवि भोलानाथविरचित, इन्हीं कविवर की अपर संस्कृत कृति श्री लीलामृत सहित, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य–
१८. **ईश्वरविलासमहाकाव्य**, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्ट श्री नाथशास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। स्व. पी. के. गोड़े द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तावना स मूल्य–१
१९. **रसदीर्घिका**, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक–पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, मूल्य–
२०. **पद्यमुक्तावली**, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्टश्रीमथुर

२२. **काव्यप्रकाशसंकेत**, भाग २ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०–श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य–८.२५
२३. **वस्तुरत्नकोष**, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–डॉ० प्रियबाला शाह । मूल्य–४-००
२४. **दशकण्ठवधम्**, पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पा०–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी । मूल्य–४.००
२५. **श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्र**, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित । सम्पा०–पं. श्रीगोपालनारायण बहुरा । मूल्य–३.७५
२६. **रत्नपरीक्षादि-सप्तग्रन्थ-संग्रह**, ठक्कुर फेरू विरचित, संशोधक–पद्मश्री मुनि जिन-विजयजी, पुरातत्त्वाचार्य । मूल्य–६.२५
२७. **स्वयंभूछन्द**, महाकवि स्वयंभूकृत, सम्पा० प्रो० एच. डी. वेलणकर । विस्तृत भूमिका (अंग्रेजी में) एवं परिशिष्टादि सहित मूल्य–७.७५
२८. **वृत्तजातिसमुच्चय** कवि विरहाङ्करचित; ,, ,, ,, मूल्य–५.२५
२९. **कविदर्पण**, अज्ञातकर्तृक, ,, ,, ,, मूल्य–६.००
३०. **कर्णामृतप्रपा**, भट्टसोमेश्वरकृत सम्पा०–पद्मश्री मुनि जिनविजयजी । मूल्य–२.२५
३१. **त्रिपुराभारती लघुस्तव**, लघुपण्डितविरचित, सम्पा० ,, मूल्य–३.२५
३२. **पदार्थरत्नमञ्जूषा**, पं० कृष्णमिश्रविरचिता, सम्पा० ,, मूल्य–३.७५
३३. **वृत्तमुक्तावली**, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट कृत; सं० पं० भट्टश्रीमथुरानाथ शास्त्री । मूल्य–३.७५
३४. **इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध**, सम्पा०–डॉ. दशरथ शर्मा । मूल्य–२.२५
३५. **प्राकृतानन्द**, रघुनाथकवि-रचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी । मूल्य–४.२५

२. राजस्थानी और हिन्दी

३६. **कान्हडदेप्रबन्ध**, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पा०–प्रो० के.बी. व्यास, एम. ए.। मूल्य–१२.२५
३७. **क्यामखां-रासा**, कविवर जान-रचित, सम्पा०–डॉ. दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा । मूल्य–४.७५
३८. **लावा-रासा**, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पा०–श्रीमहताबचन्द खारैड़ । मूल्य–३.७५
३९. **बांकीदासरी ख्यात**, कविराजा बांकीदासरचित, सम्पा०–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम. ए., विद्यामहोदधि । मूल्य–५.५०
४०. **राजस्थानी साहित्यसंग्रह**, भाग १, सम्पा०–श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम.ए. । मूल्य–२.२५
४१ **राजस्थानी साहित्यसंग्रह**, भाग २, सम्पा०–श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्न । मूल्य–२.७५
४२ **कवीन्द्र कल्पलता**, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पा०–श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूंडावत । मूल्य–२.००
४३. **जुगलविलास**, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पा०–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मूल्य–१.७५
४४. **भगतमाळ**, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पा०–श्री उदैराजजी उज्ज्वल । मूल्य–१.७५
४५. **राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग १** । मूल्य–७.५०
४६. **राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग २** । मूल्य–१२.००
४७ **मुंहता नैणसीरी ख्यात**, भाग १, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया । मूल्य–८.५०
४८. ,, ,, ,, ,, २, ,, ,, ,, मूल्य–९.५०
४९. **रघुवरजसप्रकास**, किसनाजी आढाकृत, सम्पा०–श्री सीताराम लाळस । मूल्य–८.२५
५०. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १, सं० पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय । मूल्य–४.५०

बहुरा, एम. ए. और श्रीलक्ष्मीनारायणगोस्वामी दीक्षित। मूल्य–६.२५

५४. सूरजप्रकास, भाग १–कविया करणीदानजी-कृत, सम्पा०–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.००

५५. ,, ,, २ ,, ,, ,, ,, मूल्य–९.५०

५६. ,, ,, ३ ,, ,, ,, ,, मूल्य–९.७५

५७ नेहतरंग, रावराजा बुधसिंहकृत—सम्पा०–श्रीरामप्रसाद दाधीच, एम.ए. मूल्य–४.००

५८. मत्स्यप्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, प्रो. मोतीलाल गुप्त, एम.ए., पी-एच.डी. मूल्य–७.००

५९. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री एम. सी. मोदी। मूल्य–५.५०

६०. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज–एस. आर. भाण्डारकर, हिन्दी-अनुवादक श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी, एम. ए., साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ मूल्य–३.००

६१. समदर्शी आचार्य हरिभद्र, श्रीसुखलालजी सिंघवी, मूल्य–३.००

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत

१. शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मारचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

२. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंहरचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

३. नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–डॉ० बी.जे. सांडेसरा।

४. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०–श्री बी. डी. दोशी।

५. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथरचित, सम्पा०–श्री एम. एन. गोरे।

६. एकाक्षर नाममाला—सम्पा०–मुनि श्रीरमणिकविजय।

७. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभकर्णप्रणीत, सम्पा०–श्री आर. सी. पारिख और डॉ. प्रियबाला शाह।

८. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

९. स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०–डॉ० आत्माराम जाजोदिया।

१०. वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०–डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल।

११. आगमरहस्य, स्व० पं० सरयूप्रसादजी द्विवेदी कृत, सम्पा०–प्रो० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी।

राजस्थानी और हिन्दी

१२. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग ३, मुंहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया।

१३. गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत सम्पा०–श्रीउदयसिंह भटनागर, एम.ए.

१४. राठौडांरी वंशावली, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

१५. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

१६. मीरां-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।

१७. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, संपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी।

१८. रुक्मिणी-हरण, सांयांजी झूला कृत, सम्पा० श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए., सा.रत्न

१९. सन्त कवि रज्जब : सम्प्रदाय और साहित्य, डॉ० व्रजलाल वर्मा।

२०. पश्चिमी भारत की यात्रा, कर्नल जेम्स टॉड, हिन्दी अनु० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए.

२१. बुद्धिविलास, बखतराम शाहकृत, सम्पा०–श्रीपद्मधर पाठक, एम. ए.

२२. प्रतापरासौ, जाचीक जीवण कृत, सम्पा०–प्रो. मोतीलाल गुप्त, ए. ए., पीएच. डी.

अंग्रेजी

23. Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts Part I, R.O.RI. (Jodhpur Collection), ed., by Padamashree Jinvijaya Muni,. Puratattvacharya.

24. A List of Rare and Reference Books in the R.O.R.I., Jodhpur, compiled by P.D. Pathak, M.A.

विशेष–पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है।